छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह - आषाढ़-श्रावण, संवत् 2076
जुलाई 2019

ओ३म्

अंक 165, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

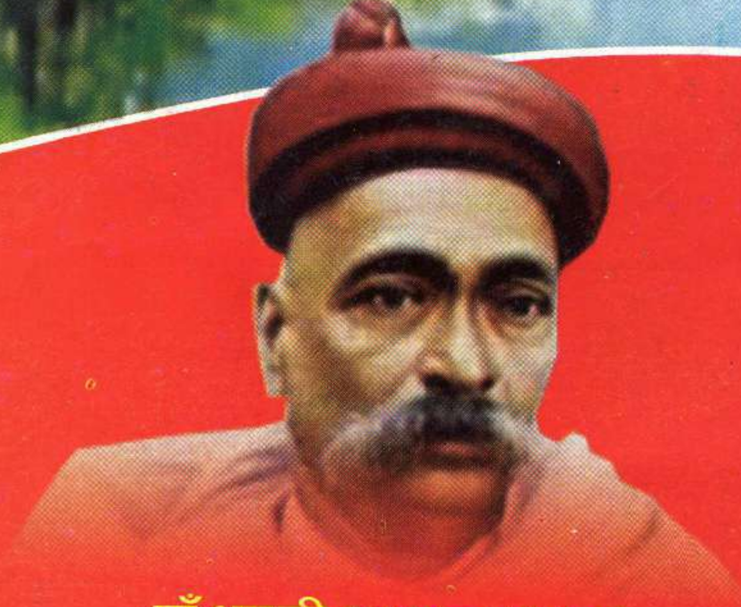

माँ भारती का सच्चा सपूत
बालगंगाधर तिलक
जयन्ती 23 जुलाई

शहीदों का सरताज
चन्द्रशेखर आजाद
जयन्ती 23 जुलाई

दिनांक 26 जून 2019 को महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में दाऊ तुलाराम जी परगनिहा "आर्य" का 94वाँ प्राकट्य दिवस के अवसर पर विश्व कल्याण महायज्ञ एवं किसान सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

दिनांक 26 जून 2019 को महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न दाऊ तुलाराम जी परगनिहा "आर्य" का 94वाँ प्राकट्य दिवस की चित्रमय झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७६
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द - १९६

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
प्र. कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 8370047335)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८९०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १४, अंक १२ — ओ३म् — मास/सन् - जुलाई २०१९

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सञ्जसञ्जकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ॥

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	माण्डूकों का वेद ज्ञान	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	कैसे बनायें बच्चों को सृजनशील	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	ऐसे धर्म को धिक्कार है जो हमें सत्यता की ओर जाने से रोके	विवेक प्रिय आर्य	०८
४.	ईश्वर के वैदिक नाम विज्ञान स्वरुप है	ओमप्रकाश आर्य	१०
५.	गंवई सुख बनाम अपसांस्कृतिक बाजारवाद	अखिलेश आर्येन्दु	१३
६.	महर्षि का वेद-भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित	खुशहालचन्द्र आर्य	१५
७.	असफलता की सम्भावना को नजर अंदाज न करें	ओमप्रकाश बजाज	२१
८.	आर्यसमाज और अन्तर्जातीय विवाह-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में	अर्जुनदेव चड्ढा	२३
९.	भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक व समाज सुधारक-बालगंगाधर तिलक	अनिल आर्य	२६
१०.	मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	ऋषि आर्य	२७
११.	क्रान्तिकारियों के सरताज-चन्द्रशेखर आजाद	लोचन शास्त्री	२९
१२.	पानी का महत्व	मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	३१
१३.	होमियोपैथी चिकित्सा से हृदय रोग का उपचार	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	३२
१४.	समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

मण्डूकों का वेद-गान

वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

संवत्सरं शशयानाः, ब्राह्मणा व्रतचारिणः।
वाचं पर्जन्यजिन्विता, प्र मण्डूका अवादिषुः॥

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः। देवता मण्डूका। छन्दः अनुष्टुप्।

● **(संवत्सरं)** वर्ष-भर **(शशयानाः)** (अपने-आपको ज्ञान से) तीक्ष्ण करते हुए, **(ब्राह्मणाः)** वेद का अध्ययन करनेवाले, **(व्रतचारिणः)** ब्रह्मचारी **(मण्डूकाः)** मण्डूक-तुल्य ब्रह्मचारी **(पर्जन्य-जिन्वितां)** पर्जन्य या आचार्य से प्रेरित **(वाचं)** वाणी को **(अवादिषुः)** बोल रहे हैं।

वर्षा की सुहानी ऋतु आई है। ताल-सरोवर वर्षा-जल से भर गये हैं। वर्ष-भर से जो व्रतधारी ब्राह्मणों के समान मौन धारण कर भूमि के अन्दर बिलों में सोये पड़े थे, वे मेंढक पर्जन्य से प्रीत वाणी बोल रहे है। आकाश में बादलों का रौरवगान, भूमि पर वर्षा का रिम-झिम संगीत, और सरोवरों में मेंढकों का समूह गान हो रहा है। दादुर-धुनि ऐसे लग रही है। मानों वटु-समुदाय मिलकर सस्वर वेदपाठ कर रहा हो। सचमुच वेदपाठी ब्रह्मचारी भी तो मण्डूक होते हैं। मेंढक वर्षा-जल में मज्जन करते हैं, ब्रह्मचारी ज्ञान-जल में। मेंढक वर्षा-जल से मुदित और तृप्त होते हैं, ब्रह्मचारी ज्ञान-वर्षा से। मेंढकों की त्वचा मण्डित होती है, ब्रह्मचारी का आत्मा। मेंढकों का सरोवर-गृह कमल-पुष्पों से मण्डित होता है, ब्रह्मचारी का गुरुकुल-गृह वेद की ऋचाओं से।

प्राचीन काल में वर्षा ऋतु में ही वेदाध्ययन आरम्भ किया जाता था। श्रावणी पूर्णिमा का वेदपाठ का उपाकर्म करके साढ़े चार या पांच मास बाद उत्सर्जन होता था। इस काल में विशेष रुप से वेदाध्ययन ही होता था। वर्ष के शेष मासों में इस काल में पठित वेद की पुनरावृत्ति तथा वेदांगों का अध्ययन चलता था। एवं वर्षभर जो वेदपारायण तथा वेदांगों के अध्ययन से स्वयं को ज्ञान से तीक्ष्ण करते रहे हैं और ब्रह्मचर्याश्रम के व्रतों का पालन करते रहे हैं, वे मण्डूक-ब्रह्मचारी ज्ञानवर्षी-पर्जन्य-आचार्य से तथा वर्षाऋतु के पर्जन्य से प्रेरित वेदवाणी का उच्चारण कर रहे हैं, सस्वर वेदपाठ तथा वेदार्थ का अध्ययन कर रहे है। यज्ञशाला में मुखरित होती हुई इन मण्डूकों की वाणी सुनकर श्रोताओं के हृदय में अपूर्व उल्लास का अनुभव हो रहा है, इनकी ऋचाओं से गूंजती हुई दिशाएँ स्वर्गीय सुख और शान्ति को प्रतिध्वनित कर रही है। हे मण्डूक बटुओं! हे वेद के गायकों! अपना यह सुरीला वेद-गान सदा ही गाते रहो।

संस्कृतार्थ :- १. शशयानाः शिश्यानाः (निरु. ९.४)। शो तनूकरणे कानच्। २. ब्रह्म वेदम् अधीयते विदुर्वा इति ब्राह्मणाः। तदधीते तद्वेद अर्थ में ब्रह्मन् से अण् प्रत्यय। ३. जिन्वति गत्यर्थक (निघं. २.१४)। ४. मण्डूका मज्जूकाः मज्जनात्, मदतेर्वा मोदतिकर्मणः, मन्दतेर्वा तृप्तिकर्मणः। मण्डयतेरिति वैयाकरणाः, मण्ड एवामोक इति वा (निरु. ९.४)

सम्पादकीय

कैसे बनाए बच्चों की सृजनशील

बच्चे माता-पिता के लिए सर्वोत्तम उपहार होते हैं, इसलिए वे किसी शिक्षण संस्था में भेजकर निश्चिन्त हो जाते हैं कि हमने अच्छी जगह प्रवेश करा दिया किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है उसे उपयोगी बनाने के लिए और भी आवश्यक कदम उठाने जरुरी हैं। क्यों कि बच्चों को समय एवं उद्देश्यानुसार बगैर ढाले उनसे वाञ्छित लाभ के बजाय हानि ही होगी। बच्चे स्वभाव से ही सृजनशील होते हैं। उनके सामने जो कुछ भी है वह सब कुछ उनके लिये कौतूहल की चीज है। बच्चे सभी चीजों के विषय में जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर लेना चाहते हैं। उनकी जिज्ञासा ही है जो उन्हें हरदम सचेत रखती है। सफर में जब आप ऊँघते हैं उस समय बच्चा खिड़कियों से बाहर का दृश्य देख रहा होता है। इन दृश्यों को देखते हुए उसके मन में अनेकानेक सवाल उठते जाते हैं। यदि उसके अभिभावक बाल मनोविज्ञान के जानकार हैं, बच्चे की जिज्ञासा में रुचि लेते हैं तो बच्चा अभिभावक से सवाल करता है। इस तरह उसकी जानकारी बढ़ती जाती है और उसके मस्तिष्क का स्वाभाविक विकास होता है।

इसके विपरीत ज्यादातर बच्चों को ऐसा माहौल नहीं मिलता, जहां वे अपनी शंकाओं का समाधान कर सकें। ऐसे बच्चे अपनी जिज्ञासाओं को मन ही मन खाते जाते हैं और फिर आगे चलकर उनके मस्तिष्क में जिज्ञासाएँ जन्म लेना ही बन्द कर देती है। ऐसे बच्चों का स्वाभाविक मानसिक विकास सम्भव नहीं है। यही नहीं उनमें अन्वेषण/ और खोजपरक दृष्टि का अभाव हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा की आधुनिक मांटेसरी और किंडरगार्टन पद्धति का विकास इसी परिप्रेक्ष्य में हुआ है। पद्धतियों में बच्चा कक्षा में निष्क्रिय श्रोता नहीं होता। अध्यापक कक्षा का वातावरण कुछ इस तरह बनाता है कि बच्चा अधिक से अधिक सक्रिय रहे। बच्चा अधिक से अधिक सवाल करता है। यह शिक्षक का कौशल होता है कि बच्चों के सवालों का जवाब भी खोजते हैं। शिक्षक की भूमिका गाइड की होती है।

अभिभावक और शिक्षक को बच्चों की इस तरह की प्रवृत्तियों की जानकारी होनी चाहिए। एकाकी खेलने वाले बच्चों को समूह में नहीं रखना चाहिए। बल्कि उन्हें इस तरह के खिलौने दिये जाते हैं जिससे वे एक ही स्थान पर खिलौनों से खेल सके। इसके विपरीत बड़े बच्चे खेल-कूद एवं अन्य काम समूह में करना पसंद करते हैं। इस प्रवृत्ति को न जानने वाले कई बार बच्चों को एकाकी रहने, खेलने और पढ़ने की सलाह देते हैं। जो कि अनुचित है। कई बार बच्चों के छोटे मोटे झगड़ों को लेकर अभिभावकों में खूनी संघर्ष तक हो जाते हैं। जबकि वही बच्चे कुछ ही देर बाद फिर से आपस में मिलजुलकर खेलना

कूदना शुरु कर देते हैं। इस तरह बच्चों की प्रवृत्ति को न जानकर लोग बच्चों के लिये व्यर्थ ही परेशानी मोल ले लेते हैं।

वास्तविकता यह है कि आज न तो घर में और न स्कूल में ही ऐसा वातावरण है जहां बच्चों की सृजनात्मक शक्ति का विकास हो सके। स्कूलों में किताबी सूचनाएँ ठूंस-ठूंस कर बच्चों के मन मस्तिष्क में भरी जाती है। अधिकतर स्कूलों में खेलकूद एवं अन्य पाठ्य सामग्री क्रियाओं का पूर्ण अभाव देखा जाता है। करके सीखने के सिद्धान्त केवल किताबों में ही सीमित रह गए हैं। विज्ञान-शिक्षा जो पूर्णतया प्रायोगिक ज्ञान पर ही आधारित है, वहां भी सैद्धान्तिक ज्ञान ही अधिक दिया जाता है। विज्ञान के उपकरण और प्रयोगशालाओं का पूर्ण अभाव देखा जा रहा है। जहां ये चीजें हैं भी वहां प्रशिक्षित शिक्षक का अभाव है। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर पहुंचे इस देश में अभी भी अधिकतर अन्धविश्वास का बोलबाला है। भूतप्रेत अभी भी यहां डेरा जमाए बैठे हैं। जाति-पाति जैसे दकियानूसी और सड़ीगली परम्पराएँ दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से फल फूल रही है। बच्चों की जिज्ञासाओं के स्वस्थ समाधान के लिए साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन दुर्भाग्यवश आज हिन्दी क्षेत्र में बाल-साहित्य को दोयम दर्जे पर रखा जा रहा है। स्तरीय साहित्यकार बाल साहित्य लिखना अपनी तौहीन समझते हैं। जो कुछ साहित्य लिखा भी जा रहा है वह या तो बच्चों के स्तर से ऊपर का है या अवैज्ञानिक है। कामिक्स बच्चों में आज तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। लेकिन कामिक्स की कथावस्तु में भूतप्रेत, सुपरमैन, परियां, अलौकिक घटनाएं और चमत्कार ही छाये हुए हैं। कामिक्स में जो कहानियां लिखी होती है उनका व्यवहारिक जीवन से कोई सरोकार नहीं होता। फलतः ऐसे कामिक्स बच्चों के कोमल मस्तिष्क के विकास के बजाय उसमें विकृति ही पैदा करते हैं।

खेलकूद एक ऐसा माध्यम है जिससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास बहुत अच्छा और स्वाभाविक ढंग से होता है। लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे बच्चों में बहुत कम को ऐसा वातावरण प्राप्त है। स्कूलों में यद्यपि खेल के लिए अलग से शिक्षक जरुर रखे जाते हैं लेकिन खेल को परीक्षा में अत्यधिक महत्व नहीं दिया जाता। जिससे बच्चे खेल को उतनी वरीयता नहीं देते जितनी कि पाठ्यक्रम को। छोटे बच्चों के लिए सरकारी स्कूलों में तो छोटे खेल के मैदान होते हैं। लेकिन कुकुरमुत्ते की तरह उग आए नर्सरी स्कूलों में खेल के मैदान या खेलकूद के वातावरण का तो कोई सवाल ही नहीं। अभिभावक या समाज की दृष्टि में जो स्कूल जितना ही अच्छा माना जाता है वहां खेलकूद की उतनी ही उपेक्षा होती है। वास्तव में यह बहुत ही गम्भीर बात है। ये ही कुछ मूल कारण है जिनके कारण ओलंपिक जैसी विश्वस्तरीय खेल स्पर्धाओं में हमारा देश शून्य से आगे नहीं बढ़ पाता। बालक ही देश के भावी निर्माता व कर्णधार होते हैं तथा उनके ऊपर ही देश का भविष्य निर्भर होता है, अतएव उनमें विभिन्न प्रकार की रचनात्मक-प्रवृत्तियां उत्पन्न कर उनकी सृजन-क्षमता का विकास करना परमावश्यक माना गया है। इस सृजन-क्षमता के विकास का दायित्व बालकों के अभिभावकों एवं अध्यापकों पर होता है। अभिभावकों की भूमिका का प्रतिपादन इसलिये किया गया कि बालक चौबीस में १८ घंटे उन्हीं के सम्पर्क में रहता है। शेष छः घण्टे वह अध्यापकों के सान्निध्य में गुजारता है। इस प्रकार अध्यापक की अपेक्षा तीन गुना अधिक समय वह अभिभावक को देता है। इसीलिए सृजन-प्रतिभा के विकास में अभिभावक का योगदान महत्वपूर्ण माना गया है। कुछ न कुछ सृजन-क्षमता प्रत्येक बालक के संस्कार में होती है। आवश्यकता केवल उसके विकास की पड़ती है। अपनी रुचि का विषय होने के कारण बालक उस विषय में दिये गये ज्ञान को शीघ्र आत्मसात् कर लेता है क्योंकि उस विषय में उसकी सृजन-क्षमता विकासोन्मुखी होती है। कुशल शिक्षक बालक की रुचि एवं उसकी प्रकृति प्रदत्त प्रतिभा का पूर्ण लाभ उठाते हुए तदनुकूल उसकी सृजन-क्षमता का विकास करता है। रुचि एवं प्रकृति के प्रतिकूल सृजन के विकास का यत्न करना

ऊसर भूमि में बीज बोने के समान ही है। इस यत्न में न तो शिक्षक को सफलता प्राप्त होती है, न ही बालक को।

कुछ बालक छात्रावस्था से ही साहित्य में अभिरुचि रखते हैं। उनमें काव्य, कहानी, निबन्ध, नाटक या समीक्षा लेखन की पूर्ण प्रतिभा होती है। कुछ वाद-विवाद या भाषण देने की कला में पटु होते है। ऐसे साहित्य-प्रेमी बालकों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार साहित्य के किसी एक क्षेत्र का विस्तृत ज्ञान देकर उन्हें स्वस्थ-साहित्य-सृजन के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये, इस प्रकार देश में अनेक कवि, लेखक, समीक्षक एवं तर्कशास्त्री उत्पन्न होंगे जो देश की साहित्यिक प्रगति में योगदान करके इसका गौरव बढ़ायेंगे। कलायें दो प्रकार की होती है - १. ललित कला. २. उपयोगी कला। ललित कला में साहित्य, संगीत, गायन, वादन एवं चित्र कला का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उपयोगी कक्षा में बढ़ईगीरी, लुहारगीरी, सुनारगीरी, राजगिरी, चर्मकारी एवं बुनकर का नाम आता है। दोनों प्रकार की कलायें मानव जीवन के लिये आवश्यक होती है। ललित कलाओं से आनन्द, यश और धन की प्राप्ति होती है तथा उपयोगी कलाओं से जीविका की। देश की बहुमुखी प्रगति के लिये दोनों प्रकार की कलाओं का सृजन आवश्यक होता है। अतः अध्यापकों को चाहिये कि जिस छात्र की रुचि जिस कला में हो उसे उस विषय का सम्यक् ज्ञान देकर उसकी सृजन क्षमता का विकास करें। अनेक बालक विज्ञान के प्रति आरम्भ से ही जिज्ञासु होते हैं। वे प्रकृति के विभिन्न क्रिया-कलापों एवं उसकी शक्तियों का सदुपयोग कर संसार को कोई नया आविष्कार दे जाने की क्षमता रखते हैं। उनमें समस्त पदार्थों, रसायनों और जीवों का सूक्ष्म अध्ययन करना उनके स्वभाव का अंग बन जाता है। ऐसे छात्रों की वैज्ञानिक प्रतिभा का लाभ उठाकर उन्हें उचित निर्देशन द्वारा वैज्ञानिक-सृजन के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस प्रकार संसार को अच्छे वैज्ञानिकों और अनेक नये आविष्कारों की प्राप्ति होगी, जिससे मानव-मात्र के कल्याण का पथ प्रशस्त होगा।

बालकों में जोड़-तोड़ की प्रवृत्ति स्वाभाविक रुप से होती है। यह प्रवृत्ति ही तकनीकी सृजन की जन्मदायिनी है। विभिन्न मशीनों के पूर्जों का उपयोग कर कोई नई मशीन बनाना या पुर्जों का बनाना, बिजली, पेट्रोल, डीजल आदि का उन कार्यों में उपयोग करना जिनमें उनका पहले प्रयोग न किया गया हो। यह सब तकनीकी सृजन के अन्तर्गत आते हैं। कल-पुर्जों, वाहनों और संचार साधनों की सफाई या मरम्मत करना, ठोस-द्रव और गैस के प्रयोग से कोई उपयोगी उत्पादन करना भी तकनीकी सृजन कहा जायेगा। कुल बालकों में पढ़ने लिखने की प्रवृत्ति कम, टेक्नोलॉजी की अधिक होती है। उन्हें इसी ओर मोड़ना चाहिए। टेक्नोलॉजी विज्ञान का ही एक अंग है। देश की औद्योगिक प्रगति के लिये इस रुचि के बालकों में तकनीकी सृजन की क्षमता का विकास करना कुशल शिक्षक का काम है। देश की आर्थिक प्रगति के लिये विभिन्न उद्योग धंधो का विकास आवश्यक होता है। उद्योग-धंधों का विकास तभी संभव होगा, जब बालकों में औद्योगिक सृजन की क्षमता उत्पन्न की जाए। औद्योगिक सृजन में बड़ी बड़ी फैक्ट्रियों के उत्पादन की ही नहीं, छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुछ बालकों में नौकरी या खेती की बजाय उद्योग धंधों की अभिरुचि अधिक पाई जाती है। अध्यापक को चाहिये कि ऐसे बालकों के स्वभाव का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करें कि वह किस उद्योग में अभिरुचि रखता है ? जिसमें उसकी रुचि हो उसी उद्योग के विभिन्न आयामों का ज्ञान देकर उसे औद्योगिक सृजन में दक्ष करना चाहिये। पिछले दिनों हरयाणा सोनीपत डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के कक्षा १२वीं में पढ़ने वाले छात्र विकास गुप्ता ने १८ किताबें लिखकर एक कीर्तिमान कायम किया है। इस प्रकार हम चाहते है कि हमारे देश फिर से विश्व गुरु बनकर संसार का मार्गदर्शन करें तो हमें हमारी पीढी को देश की आवश्यकता अनुरुप प्रशिक्षित करना होगा, तभी विश्व मानचित्र पर एक सशक्त समृद्ध व खुशहाल राष्ट्र बना पाएंगे, अन्यथा कोई मार्ग नहीं।

— आचार्य कर्मवीर

समालोचनात्मक

ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो हमें सत्यता की ओर जाने से रोके

लेखक : विवेक प्रिय आर्य,

प्रत्येक प्राणी का यह स्वभाव होता है कि वह दुःख से बचना तथा सुख को पाना चाहता है। फिर मनुष्य तो सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ प्राणी है, वह क्यों नहीं सुख की प्राप्ति के लिए पूर्ण पुरुशार्थ करेगा ? आज संसार भर के प्रबुद्ध मनुष्य (चाहे वे किसी भी महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो) संसार को सुखी बनाने का यत्न अपने–अपने ढ़ंग से करते प्रतीत हो रहे हैं। परंतु इसके उपरांत भी आज सम्पूर्ण मानव समाज अशंति, आतंक, हिंसा, घृणा, मिथ्या, छल, कपट, ईर्श्या, राग, द्वेष से ग्रस्त होकर अति दुःखी व अशांत है। विचार आता है कि क्या कारण है कि चिकित्सा करते रहने पर भी रोग बढ़ता ही जा रहा है? मेरा मानना है कि इस सब का मूल कारण सत्य और वास्तविकता से अनभिज्ञ रहना अथवा जानकर भी उसके अनुकूल व्यवहार न करना ही है। आज सारे संसार में विकास की होड लग रही है। हम छल से दूसरों को गिराकर उससे आगे जाना चाहते हैं। दूसरों की झोपडियां जलाकर अपने भव्य भवन बनाना चाहते हैं, दूसरों की थाली से सूखी रोटियां भी छीनकर स्वयं सुस्वाद सरस भोजन करना चाहते हैं, दूसरों के तन से जीर्ण शीर्ण वस्त्र भी छीनकर स्वयं बहुमूल्य वस्त्र पहनकर फैशन करना चाहते हैं तथा दूसरों का गला दबाकर स्वयं एकाकी अमर जीवन जीना चाहते हैं। क्या ऐसा जीवन हमारी सुख, शांति का विनाशक नहीं ? क्या मानवीयता का हनन करने वाला नहीं है ? हमारा विकास तो तभी होगा जब हमारा जीवन सत्यता से परिपूर्ण होगा। क्योंकि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी–देवताओं के नाम पर जितना रक्तताप व वैमनस्यता संसार में हो रही है, संभवतः उतना किसी अन्य कारण से नहीं। धर्म के नाम पर यह पाप क्यों? धर्म और ईश्वर के नाम पर ईर्श्या, राग, द्वेष, घृणा, हिंसा क्यों? हमें धर्म का ऐसा सच्चा स्वरूप संसार के सामने लाने का प्रयास करना होगा, जिसमें पाखण्ड, अंधविश्वास व असत्य का कोई स्थान न हो। यही विचार संसार के ऋषियों (ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त) का रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती तो परमाणु से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान व उससे अपना व दूसरों का उपकार करना ही विद्वानों का कर्तव्य बताते हैं। दुर्भायवश महाभारत के समय से वेद के नाम पर, धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी–देवताओं के नाम पर कुछ विकृतियों ने जन्म लिया और वेद केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह गया। उस वैदिक कर्मकाण्ड के नाम पर मांसाहार, व्यभिचार, पशुबलि, नरबलि, स्त्री व शूद्र वर्ग के प्रति हीन भावना, मदिरापान आदि कुरीतियां इस देश में फैल गईं। एक ईश्वर की जगह अनेक देवी–देवता प्रचलित होकर विश्व में हजारों मत–मतान्तर चल पड़े।

सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्य सम्पन्न ईश्वर शक्ति के अस्तित्व में रहते हुए भी इन देवी–देवताओं (वह भी एक दो नहीं, चार छः नहीं अपितु पूरे तैंतीस करोड) को प्रभाव में लाने की आवश्यकता क्यों हुई ? इसका किसी के पास कोई तर्क संगत उत्तर नहीं है। जीवन में पूजा का किसी रूप में कोई भी उपयोग संभव नहीं है और पूजा से कुछ भी प्राप्त कर पाना संभव नहीं, व्यक्ति जो कुछ प्राप्त करना चाहता है या करता है वह केवल अपने पौरूष और पुरूषार्थ भरे प्रयासों से प्राप्त करता है। लेकिन सहज और सरलतम रूप में प्राप्त करने की मनुश्य की स्वाभाविक मनः प्रवृत्ति ने उसे पौरूष और पुरूषार्थ से दूर ढकेल दिया और पूजा से वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर सका। इस कारण देश और समाज पतित होता चला गया। समस्याएं बढ़ती गईं, समाधान संभव नहीं हो सका। देश पराधीन हो गया, विदेशी आक्रमणकारी हमारी राजसत्ता को हथियाकर बैठ गये। अत्याचार हो रहे, समाज में हा हाकार हो रहा, समाज लुटता–पिटता रहा पर कोई बचाने वाला पैदा ही नहीं हुआ। जिन देवी–देवताओं पर हम विश्वास साधकर बैठे वह दीन–हीन स्थिति में मौन धारण कर देवालयों में बैठे कांप रहे थे। हमारी रक्षा करना तो दूर वह स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर पा रहे थे। हम ढ़ोल, मजीरा, शंख, झांझर और चिमटा लेकर उन पत्थर के देवी–देवताओं के सामने गीत गाते कीर्तन करते रहे। मौत के भय से थर–थर कांपते कायर कायर और क्लीवजन कंठीमाला हाथ में लेकर ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों में अपना भाग्य लेख पढ़ने के लिए जन्मकुण्डली बिछाकर बैठे रहे। मंदिरों–देवालयों में जाकर देवी–देवताओं की मूर्तियों के सामने माथा रगडते रहे लेकिन उनके दिव्य चक्षु इहलोक के पैशाचिक दुराचारों को कभी नहीं देख सके। विदेषी आक्रांता इन मूर्तियों को तोडकर चकनाचूर करते रहे। उन्हें खण्ड–खण्ड कर कुओं, पोखरों में फैंका गया, पर न तो ये

देवी–देवता कुछ कर सके और न उनके पुजारी। बल्कि यह पुजारी तो बलात्कार पीडित महिला की तरह असहाय और विवश होकर आंसू बहाते रहे। यदि इन्होंने इसके विपरीत स्वयं पौरूष की भाशा पढ़ी होती, धर्म और ईश्वर के सच्चे निराकार स्वरूप को समझा होता तो कोई शक्ति इस देश की ओर आंख उठाकर नहीं देख पाती। सोमनाथ मंदिर की कहानी जब हमारे स्मृति पटल पर उभर कर आती है तो आंखों में खून उतर आता है। हम केवल पौराणिक आख्याओं तक सीमित बने रहे। भूगोल से हम प्रारंभिक परिचय कभी प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए धरती को कभी शेषनाग के फन पर टिका दिया, कभी कष्यप की पीठ पर और कभी गाय के सींग पर। क्योंकि सभी जीवधारियों की कालावधि निश्चित है, अतः झूठ को स्थाई रूप देने की दृश्टि से इन तीनों को त्रिकालजयी बना दिया और धरती का गैंद रूप देकर इधर से उधर उठाकर रखते रहे। झूठ में हमारी अगाध आस्था रही है कि हमें अपने पूर्वजों की कही बात का भी ध्यान नहीं रहता। आर्यभट्ट और वरामिहिर हमारे ही पूर्वज थे, जिन्होंने पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा की परिधि, उनका व्यास और उनकी आपस की दूरी की माप सटीक रूप में दी थी। लेकिन हमारे झूठ के क्षेत्र में वह कहीं बाधक न बन जाये इसलिए उसे जान–बूझकर दृष्टि ओझल कर दिया। हमारे यह पुजारी के व्यवसायी टिपकादास धरती पर फल कटहेरी की तरह ब्रह्म का बीज बोते रहे हैं, जिनके बेल रूप में फैलकर कहीं पैर टिकाने को स्थान नहीं छोडा है। हमारे यहां महाभारत के महानायक कर्मयोगी श्रीकृष्ण और गीता के रूप में उपलब्ध उनकी वैचारिक धरोहर युगों युगों तक मनु पुत्रों का मार्गदर्शन कर सकती है। लेकिन इन टिपकादासों ने उसकी विषयवस्तु की सहज विश्वसनीयता पर तमाम तरह के प्रश्नवाचक चिन्ह खडे कर दिये हैं। श्रीकृष्ण जैसे योगीराज, अदम्य व्यक्तित्व पर भी इन मिथ्यावाद के प्रणेता टिपकादासों ने अपनी अतृप्त यौन पिपासा को विभिन्न रूपों में उन पर निर्ममता से प्रत्यारोपित कर उन्हें रसिक बिहारी, छैल बिहारी, रास बिहारी, लीला बिहारी और बांके बिहारी जैसे तमाम तरह के नाम देकर उन्हें राधा के पैरों में महावर रचाने बैठा दिया।

आज धरती पर उपलब्ध सभी सुख सुविधाएं और उसके उपकरण स्वयं मानव ने पैदा किये हैं। किसी देवी देवता का उसमें इंच मात्र का योगदान नहीं है किंतु पाखण्डी–मिथ्यावादी अपने स्वार्थ हित में उसका विभिन्न रूपों में गुणगान करते चले आ रहे हैं। कालान्तर में धीरे–धीरे इस देवत्व भाव को समान भाव से पशु पक्षियों पर भी आरोपित कर दिया और अंत में यह देवता पत्थरों पर भी उकेरे जाने लगे। पराकाशठा की स्थिति तो यहां तक पहुंच गई कि ढेले पर कलावा बांधकर उसे सीधे–सीधे गणेश भगवान बना दिया गया। इस देश में भिखारी से लेकर पुजारी तक मांगकर खाने वालों की फौज खडी होती चली गयी। ऋषि ने 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' का जो उपदेश दिया उसके विपरीत बहुदेवतावाद का अंतहीन सिलसिला खडा हो गया, जो आज भी समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। पत्थरों, धातुओं और लकडियों के टकड़ों पर तमाम तरह के देवी–देवताओं की विचित्र–विचित्र शक्लें उतारकर देवालयों, मंदिरों और घरों में खडी कर दी। यह देवी–देवता आज तक किसी को कुछ नहीं दे सके, बल्कि स्वयं इस कमाऊ समाज पर भार बन जाते हैं। हमारे ही पैदा किये हुए देवता, जो हमारी ही दी हुई व्यवस्था पर जीवित हैं, हमें उन्हीं के आगे मंगिता बनाकर बिठा दिया। वैसे सृष्टि नियम के विरूद्ध बातें सभी मतों में हैं, जैसे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद सहाब ने एक ही उंगली से चांद के दो टुकडे कर दिये। इसी प्रकार हमारे पुराणों में सबसे अधिक चमत्कारिक बाते हैं, जैसे हनुमान ने अपने बचपन में ही सूर्य को गाल में रख लिया, कुंती कर्ण कान से उत्पन्न हुआ, योगेष्वर श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठा लिया, श्रीकृष्ण द्रोपदी का चीर बढ़ा दिया आदि। भूत–प्रेत, गण्डा, डोरी, श्राद्ध–तर्पण, फलित ज्योतिश, गृहों का नाराज होना या खुश होंना तथा मूर्तिपूजा व अवतारवाद का मानना अंधविश्वास व पाखण्ड है। क्योंकि यह सब बातें प्रकृति नियम के विरूद्ध हैं। इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर व लाभदायक होगा। वैदिक धर्म में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए संध्या करना (जिसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं), दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना (जिसे देवयज्ञ कहते हैं)। षरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए यम–नियमों से समाधि तक पहुंचने के लिए अश्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना, वेदों सहित सभी आर्श ग्रन्थों को पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य सिद्धांत वैदिक धर्म के हैं। इसलिए हम अपने जीवन को पवित्र स्वस्थ्य रखना चाहते हैं तो हमें अन्य मतों व पन्थों को छोड़कर वैदिक धर्म अपनाना चाहिए, जिससे हम अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊंचाईयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बने। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं है।

निवास : ऊंचागांव (सुसाइन), नसीरपुर
(हाथरस / मथुरा) उ.प्र. – 281308

गवेषणात्मक

ईश्वर के वैदिक नाम विज्ञानस्वरूप हैं

- ओमप्रकाश आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ वैदिक नामों की व्याख्या की है। यदि उन नामों की वैज्ञानिकता पर विचार किए जाए तो उसके सारे नाम विज्ञान की कसौटी पर खरे सिद्ध होंगे।

प्रथम 'विराट्' शब्द को लें। इस शब्द को महर्षि ने अनेक प्रकार से जगत् को प्रकाशित करने वाला लिखा है। हम सभी जानते हैं कि आकाशस्थ लोक लोकान्तरों की संख्या अनगिनत है। उनकी गणना नहीं की जा सकती। सौरमंडल, आकाशगंगा, पुच्छल तारे, आकाशगंगाओं की संख्या भी अनगिनत, उसमें असंख्य तारे- इन सब को परमात्मा प्रकाशित करता है। कोई पूछे, सूर्य स्वयं प्रकाशवान है - उसमें प्रकाश कहां से आता है ? तो इसका उत्तर होगा- उसमें प्रकाश का कारण ईश्वर है। क्या इस बात को कोई झुठला सकता है कि सूर्य में प्रकाश नहीं है ? यह वैज्ञानिक सत्य है। सूर्य, अजस्र ऊर्जा का स्रोत है। वह ऊर्जा अक्षुण्ण है। ऐसे समस्त लोगों में एक ही परमात्मा का प्रकाश है इसी से उसका नाम 'विराट्' है जो 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'राजृ' धातु से बनी है। राजृ धातु दीप्ति अर्थात् प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है। संभवतः आने वाले समय में सारे यंत्र सौर ऊर्जा से संचालित हों। ऊर्जा क्या है? प्रकाश ही तो है। प्रकाश क्या है ? परमात्मा का ही तो तेज है।

'अग्नि' भी परमात्मा का नाम है। स्वामी जी लिखते हैं- स्वप्रकाश होने से परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। 'अग्नि' नाम के पीछे विज्ञान 'अग्नि' भी ऊर्जा है। इसका उच्चारण करते ही ऊष्मा आभास होने लगता है। एक लकड़ी को दूसरी लकड़ी से रगड़ने पर अग्नि पैदा हो जाती है। पत्थर को टकराने से अग्नि पैदा हो जाती है। समुद्र में बड़वानल क्या है ? अग्नि ही तो है। इन सब में प्रकाश है। इस प्रकाश का कारण अणु-अणु में व्याप्त परमात्मा ही है जिसकी प्रकाश के रूप में अनुभव कर सकते है। अतएव परमातमा का अग्नि नाम सर्वथा सार्थक सिद्ध होता है। 'अग्नि' आज का विज्ञान तो पूर्णतः अग्नि पर ही अवलंबित है। बिना विद्युत (अग्नि) के सारे विज्ञान के साधन पंगु सिद्ध हो जायेगे अग्नि शब्द को स्वामी जी ने इण् गत्यर्थक धातु से निष्पन्न बताया है। इसका तात्पर्य है अग्नि गतिमय है। गति किस प्रकार ? जब तक हमारे शरीर में अग्नि है तब तक शरीर चलेगा। इसके समाप्त होते ही जीवनलीला समाप्त। जब तक सूर्य में अग्नि है तब तक वह प्रतिदिन उदय और अस्त होगा। उसके समाप्त होते ही प्रलय की स्थिति होगी। जब तक बिजली रहती है यंत्र चलते हैं। बिजली चली जाने से सारे यंत्र ठप्प हो जाते हैं। इस प्रखार अग्नि गति प्रदान करती है। यही गति चेतन के लिए जीवन है और सृष्टि के लिये संचालिका।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं - परमात्मा का एक नाम 'विश्व' है। यह 'विश्' धातु से प्रवेश अर्थ में प्रयुक्त होता है। सारा भौतिक जगत् परमात्मा में प्रविष्ट हो रहा है। इस नाम के पीछे क्या विज्ञान है ? विज्ञान नहीं बहुत बड़ा विज्ञान छिपा है। यदि रात में आकाश में दृष्टि डाली जाए तो पता चलेगा कि दिखनेवाला समस्त पिंड मनुष्य की चिंतनशक्ति से परे हैं। उनकी कोई निश्चित सीमा नहीं है। इस असीमित आकाश में अनन्त लोक-लोकान्तर है। उनकी सही-सही गणना व ज्ञान प्राप्त करना असंभव है। ये सारे लोक एक नियम में बद्ध होकर गति कर रहे है। किसी भी स्थिति में उसमें निमय का उल्लंघन नहीं होता है। परमात्मा भी अनन्त है। सृष्टि भी अनन्त है। सारे भूमंडल परमात्मा में प्रविष्ट है। उसी में प्रविष्ट होकर गति कर रहे हैं। परमात्मा से कोई भी स्थान खाली नहीं है। वह सर्वव्यापक है। विश्व व्याप्य है। परमात्मा में सब प्रविष्ट हो रहे हैं। इसी प्रवेश के कारण उसका एक नाम 'विश्व' है। आज के वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार कर रहे हैं कि सृष्टि अनंत है। उसका पता पाना संभव नहीं है। 'विश्व' नाम परमात्मा की व्यापकता

पर प्रकाश डालता है।

परमात्मा का नाम 'हिरण्यगर्भ' भी है। स्वामी जी इस शब्द का अर्थ सूर्यादि तेजवाले पदार्थों का गर्भ और उत्पत्ति करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जिसने तेजवाले स्वतः परतः प्रकाशित लोक हैं उन सबकी उत्पत्ति एक गर्भ से होती है। यह गर्भ क्या है? आकाशस्य ग्रह, उपग्रह, तारे जो एक नियम में चालित है उनकी उत्पत्ति गर्भ से हुई है। आधुनिक वैज्ञानिक ने इस बात को सिद्ध किया है कि प्रारंभ में सृष्टि उत्पत्ति के समय सूर्य, चंद्र, पृथ्वी आदि एक महापिंड से समाहित थे। एक महा विस्फोट हुआ। उस महाविस्फोट के अनन्तर पृथ्वी, सूर्य, चंद्र आदि की निष्पत्ति हुई है। इस महान् पिंड का नाम वैदिक शब्द 'हिरण्यगर्भ' है। हमारा सौरमंडल उसी विस्फोट का परिणाम है। जिस प्रकार परिवार में अनेक सदस्य रहते हैं उसी प्रकार हिरण्यगर्भ रूपी परिवार से उत्पन्न सदस्य सूर्यादि उसी परमात्मा के आधारस्वरुप हैं। सबका आधार, उत्पत्ति का मूल कारण होने से उसका 'हिरण्यगर्भ' नाम सार्थक और वैज्ञानिक है।

परमात्मा का एक नाम 'वृहस्पति' है। स्वामी जी लिखते हैं कि जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि पिंडों का स्वामी है इससे उस परमात्मा का नाम 'वृहस्पति' है। चंद्रमा से बड़ी पृथ्वी है। पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा सूर्य है। बृहस्पति ग्रह में १३०० प्रविष्टियाँ समा सकती है। सूर्य से भी लाखों गुना बड़े-बड़े सूर्य है। इतने बड़े-बड़े भूखंडों को नियम में बाँधकर उनको कौन चलाता है ? सन् १९८० के दशक में एक पुच्छल तारे की पूँछ का टुकड़ा बृहस्पति ग्रह पर गिरा था। उस पर हमारी पृथ्वी के जैसे तीन गड्ढे बन गए थे। इतने बड़े-बड़े भूखंड जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती। उन सबका स्वामी है परमात्मा। वह उन सबसे बड़ा है। उससे बड़ा कोई नहीं है। इतना बड़ा परमात्मा मानव की चिंतनशील से परे है। इसी कारण उसका नाम 'वृहस्पति' है। यह नाम भी वैज्ञानिक अर्थ प्रदान करता है।

'ईश्वर' शब्द स्वयं में वैज्ञानिक अर्थ रखता है। अनंत ऐश्वर्यवान् होने के कारण उसका नाम 'ईश्वर' है। ईश्वर का अनंत ऐश्वर्य क्या है ? उसका अनंत ऐश्वर्य है - उसका परमधाम, परमधाम, परमगति या मोक्षसुख। मोक्षसुख से बढ़कर अन्य कोई सुख नहीं है। उसी सुख की प्राप्ति मानवजीवन का मुख्य उद्देश्य है। वहाँ पहुँचकर आत्मा परमात्मा के अनंत आनंद का बहुदीर्घ काल तक उपभोग करता है। उसी सुख को प्राप्त करने के लिए आत्मा सदा लालायित रहता है। उसको मोटे रूप में इस प्रकार समझा जा सकता है - वह धनी व्यक्ति है। उसके पास अपार धन संपदा है। महल है। जमीन-जायदाद है। मोटर-कार है। नौकर-चाकर हैं। ये सब सबके सुक के साधन है। यही उसके ऐश्वर्य हैं। वह ऐश्वर्यशाली व्यक्ति कहलाएगा, यद्यपि उसके ये ऐश्वर्य एक निश्चित सीमा में बंधे हुए हैं। परमात्मा का मोक्षसुक सीमा या बंधन से रहित है। आत्मा परमात्मा की अनंत ज्ञानपूर्ण सृष्टि का आनंदपान करता है। यह मोक्षसुख अनंत है। परमात्मा अनंत ऐश्वर्यवाला है। अनंत ऐश्वर्यवान् होने के कारण उसका 'ईश्वर' नाम वैज्ञानिक अर्थ से परिपूर्ण है। उसका दूसरा ऐश्वर्य है - यह अनंत कोटि का ब्रह्माण्ड, यह सौंदर्यशालिनी सृष्टि जो अनंत रहस्यों से भरीहुई है। प्रकृति में जितना रहस्य है वह सब परमात्मा का ऐश्वर्य ही तो है। प्रातःकाल वायु का एक शीतल झोंका आपके तन-मन को आनंद से विभोर कर देता है। प्रकृति के नजरों को देखकर न जाने कितने भावुकजन मंत्रमुग्ध होकर अपने को कुछ समय के लिये भुला दिए। सृष्टि के रहस्य को जानकर न जाने कितने वैज्ञानिक दाँतों तले अँगुली दबा लिए। ये सारे ऐश्वर्य भौतिक है जो परमात्मा के हैं। इन पर उसी का अधिकार है। इसी से वह ईश्वर कहलाता है।

'सरस्वती' एक ऐसा शब्द है जो लोक में एक देवी विशेष के अर्थ में प्रयुक्त होता है किन्तु यह शब्द भी परमात्मा का एक नाम है जो स्त्रीलिंग में है। स्वामी जी ने इसका अर्थ किया है- जिसको विविध यथावत होवे, इससे उस परमेश्वर की नाम सरस्वती है। अर्थात् शब्द, अर्थ, संबध प्रयोग का ज्ञान। इसको इस रूप में समझें-परमात्मा की सृष्टि पूर्णतया वैज्ञानिक है। मानव का शरीर लें। यह रचना कितनी विचित्र है जिसे देखकर बड़े-बड़े वैज्ञानिक हतप्रभ रह जाते हैं। शरीर की बाह्य रचना तो विचित्र है, ही

इसकी आंतरिक रचना और भी विचित्र है। मानव के मस्तिष्क में पूरा ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। आँख एक नहीं दो बनाया। काम एक नहीं दो बनाया। हाथ एक नहीं दो बनाया। नथुने एक नहीं दो बनाया। पैर एक नहीं दो बनाया। इनको कैसे उचित स्थान पर स्थिर किया है। ऊपर चमड़ी, अंदर, रक्त-मांस, अस्थि, हृदय, यकृत, उदर आदि। फिर सपनों की अनोखी दुनियां रचाई। यह सब परमात्मा का विविध विज्ञान ही है। इनका संबंध यथावत् बनकर अपनी विज्ञानवती विद्या का परिचय दिया है। इसी कारण उसका नाम 'सरस्वती' है। यह तो रही शरीर की बात। आप एक परमाणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक की रचना में विविध विज्ञान देख सकते हैं। एक छोटे से कण या एक छोटे से पत्ते में भी आपको बहुत बड़ा विज्ञान नजर आएगा। 'सृ' धातु से 'सरस्वती' शब्द निष्पन्न है। यह धातु विविध विज्ञान अर्थ प्रतिदिन करता है। इस नाम का आधार परमात्मा की बनाई विविध वैज्ञानिक सृष्टि है।

'पुरुष' भी परमात्मा का एक नाम है। यह शब्द 'घृ' धातु से बना है। 'घृ' धातु का अर्थ पूर्ण होता है। पूर्ण अर्थात् सब जगत् में विद्यमान होना मौजू रहना। परमात्मा कण-कण में पूर्ण हो रहा है। इसी कारण उसका नाम 'पुरुष' है। यदि एक परमाणु का सूक्ष्म वैधानिक विश्लेषण किया जाए तो पता चलेगा कि एक परमाणु में भी सारे सौरमंडल जैसी स्थितियाँ पाई जाती है। इसी से परमात्मा की शक्ति को कण-कण में होने की बात कही गई है। एक सूक्ष्म अणु से लेकर बड़े-बड़े पिंड में वही शक्ति समाहित है। इसी कारण उसे सर्वव्यापक कहा गया है। अनंत नाम दिया है। पुरुष नाम दिया है। पुरुष नाम परमात्मा के पूर्ण होने का आभास कराता है। हवा दिखलाई नहीं पड़ती किन्तु उसमें भी एक नियम है। आक्सीजन और हाइड्रोजन गैस के मिलने से जल का निर्माण हो जाता है। उक्त गैसे दिखलाई पड़ती हैं क्या ? नहीं। उसमें भी एक नियम है। वह नियामक शक्ति उनमें भी पूर्ण है। अतः 'पुरुष' पूर्णतः वैज्ञानिक अर्थ प्रदान करता है।

इस प्रकार ईश्वर एक-एक नाम कोई न कोई वैज्ञानिक अर्थ अभिव्यक्त करता है जो विज्ञान से संबंधित है। 'ओम्' नाम के बारे में किसी को कोई संदेह नहीं है। योग क्रियाओं में 'ओम्' ध्वनि पर विशेष बल दिया जाता है। ध्यान में 'ओम्' का मानसिक जाप किया जाता है। यह परमात्मा का प्रधान और निज नाम है। सर्वोत्तम नाम है। इसकी ध्वनि से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर सुप्रभाव पड़ता है। यह स्व.यं में एक प्राणायाम है। पूर्णतः वैज्ञानिक नाम है। इसके उच्चारण का प्रथ्यक्ष प्रभाव स्वामी रामदेव जी पूरे विश्व में प्रसारित कर रहे हैं। ध्वनिविस्तारक यंत्र से दिन-रात हरे राम, हरे कृष्ण, हरि हरि चिल्लाने वाले ईश्वर के वैज्ञानिक नाम का अर्थ क्या जानें ? आर्यसमाज के अतिरिक्त ईश्वर के नाम का वैज्ञानिक अर्थ और कौन बताता है ? इन नामों की वैज्ञानिका न समझ पाने के कारण लोगों ने एक-एक नाम से एक-एक भगवान् बना डाले जो विभिन्न मत-मतान्तरों के रूप में जन्म लेकर वैदिक मान्यता को खंडित कर दिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उन्हीं बिगड़े आर्यों को सुधारकर हमारे समक्ष रखा और सत्यार्थ प्रकाश में प्रथ्म स्थान दिया। लोक कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि ईश्वर के नामों में भी विज्ञान भरा पड़ा है। इसी कारण स्वामी जी ने लिखा है कि ईश्वर का कोई नाम अनर्थक नहीं है। आवश्यकता है चिंतन और मनन करने की।

पता - आर्यसमाज रावतभाटा, वाया-कोटा, राजस्थान 323305

भ्रान्ति निवारण

मांसाहार करते रहने पर और इस जीवन में रोगों से बच जाने पर यह मत समझें कि मांसाहार उचित है क्योंकि ईश्वर, धर्म व प्राकृतिक दृष्टि से मनुष्य के लिए मांसाहार सर्वदा-सर्वथा अनुचित है, अमानवीय है। मांसाहारी लोग कभी भी ईश्वर के भयानक दण्ड से बच नहीं सकते हैं। मांसाहार करने पर एक दिन ईश्वर से दारूण दुःख भोगना ही पड़ेगा। अतः समय रहते सावधान हो जाएं तथा अपने कल्याण के साथ-साथ परिवार, समाज व राष्ट्र के कल्याण के लिए मांसाहार का त्याग कर व शाकाहार को अपना कर इस लोक और परलोक में सुख शांति की प्राप्ति करें।

गंवई सुख बनाम अपसांस्कृतिक बाजारवाद

विरासत

- अखिलेश आर्येन्दु

पिछले दिनों एक मजेदार खबर पढ़ने को मिली। खबर पढ़कर एक बार खबर की विश्वसनीयता पर यकीन नहीं हुआ, लेकिन जब इसके पीछे के कारणों को पढ़ा तो लगा, खबर की सच्चाई पर शक करना ठीक नहीं है। खबर के मुताबिक अमरीकी लोग शहरों की अपेक्षा गांवों में रहना अधिक पसंद करने लगे हैं। इसका कारण गांव की आबोहवा, शांति, सौहार्द और स्वतंत्रता के साथ जीने का अलौकिक मजा बताया गया था। मैं सोचने लगा, भारत में तो इसके ठीक उल्टा हो रहा है। लोग गांवों से पलायन करके कस्बों या शहरों में बसना अधिक पसंद करने लगे हैं। अमेरिका में हो रहे इस बदलाव की वजहें ऐसी नहीं है कि वह अविश्वनीय लगे। क्योंकि अमेरिका ऐसा देश है जहां सुख-सुविधाओं की अपेक्षा अब लोग शांति, आंतरिक सुख और प्रदूषण रहित माहौल को पसंद करने वाले लाखों में हैं। जबकि अभी तक यही माना जाता रहा है कि शहर की सुख-सुविधाओं और आय के बेहतर साधनों को छोड़ लोग गांव में नहीं रहना चाहते। गौरतलब है भारत में गांव पिछड़ेपन की निशानी है तो अमेरिका में शांति और आनन्द के धाम। यही नहीं अनेक विकसित देशों के सरकारी और प्राइवेट मुलाजिम भी गांवों में रहना अधिक पसंद करने लगे हैं। यानि विकास का प्रतीक विकसित देशों में शहर नहीं गांव होते जा रहे हैं।

भारत के गांवों में न तो सरकारी डाक्टर अपनी सेवा देना चाहते है और न ही ग्राम सेवक। दोनों को शहर छोड़ना अत्यंत कष्टकर लगता है। केन्द्र सरकार ने पहली नियुक्ति के तहत डाक्टरों को कुछ साल तक गांवों में सेवा देना अनिवार्य तो कर दिया है लेकिन अब भी स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आया है। आज गांवों की स्थिति अत्यन्त शोचनीय बन गई है। जो गांव भारत के गौरव, पहचान और अस्मिता के प्रतीक हुआ करते थे वे भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के प्रभाव के चलते-चलते अपने गौरव और पहचान खोते जा रहे हैं। ग्राम्य संस्कृति, कला, शिक्षा, व्यवहार और आचार-विचार की जो अहमियत कभी हुआ करती थी, वह अब बाजारीकरण और शहरीकरण के चपेट में आकर अपनी अहमियत खो चुके हैं और जो बचे हैं वे भी खोते जा रहे हैं।

गांवों की लोक संस्कृति, लोक कलाओं, लोक शिक्षा, लोक धर्म और लोक भाषा कभी भारत की पहचान हुआ करते थे। इनकी अहमियत शहरों और नगरी संस्कृति में पले-बढ़े लोग भी किया करते थे। गांधी, बिनोबा, लोहिया, जेपी, लालबहादुर शास्त्री व चौधरी चरण सिंह जैसे स्वदेशी के हिमायती महापुरुषों ने गांवों के बढ़ने में ही भारत के बढ़ने के सूत्र देखे थे। इसलिए गांधी और लोहिया गांवों के कुटीर उद्योग, ग्राम्य-शिक्षा, ग्राम्य-संस्कृति, शाकाहार-संस्कृति और ग्राम्य-कलाओं को संरक्षित करके आगे बढ़ाने के लिए सबसे जरुरी मानते थे। लेकिन यह त्रासदी कहेंगे या विडम्बना। गांधी का नाम लेकर कांग्रेस ने और लोहिया का नाम लेकर लोहियावादियों ने इनके किसी एक भी विचार मॉडल को नहीं अपनाया। सभी पार्टियां गांवों की बात तो करती है लेकिन गांवों की पहचान को संरक्षित करने, गांवों का विकास करने और गांव की अस्मिता की रक्षा करने के महत्वपूर्ण कार्य को अमलीजामा पहनाने से परहेज करती रही है। आज भी गांव विकास के प्राथमिकता की सूची में नहीं है। शहर की छांव तले जितने भी गांव हुआ करते थे वे सभी शहर के हिस्से हो गए हैं और वहां भी एक बड़ा बाजार खड़ा हो गया है। नाम तो आज भी इनका वही पुराना गांव का ही है लेकिन वहां गांव दूर-दूर तक नहीं है।

नई मोदी सरकार गांव, गाय, गंगा और गौवंश की हिफाजत में इनके संरक्षण की बात कही थी। मोदी प्रधानमंत्री है। देखना यह है कि जो वह गाय, गंगा और गौवंश की रक्षा के लिए विशेष कदम उठाने की बात कह

रही है कितनी पूरी करती है। एक कार्यकाल बीतने के बाद भी गांव, गंगा, गाय और गौवंश की हिफाजत करने के सारे वादे अभी वादे ही बने हुए हैं। एनडीए सरकार से बहुत उम्मीदें हैं। मोदी एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखते हैं। उन्होंने गांव, गरीबी, गाय, गंगा और गौवंश की समस्या को बहुत पास से देखा है। गांव की बदहाली को जो समझता है वही गांव और गांव की सभी प्रकार की प्रवृत्तियों को समझ सकता है। इसलिए मोदी अधिक कारगर ढंग से गांव की समस्या को समझ सकते हैं। लेकिन अभी जितनी योजनाएँ गांव, गंगा और गौवंश की हिफाजत के लिए बनाई गई है, उस पर अभी कोई ठोस कार्य होता नजर नहीं आ रहा है।

गांवों की कुटीर उद्योग खतम हो गए हैं। पेड़ लगातार काटे जा रहे हैं। कुएँ सुख गए हैं और जो बचे हैं वह सूखने के कगार पर है। ताल, पोखर, बावड़िया, छोटी नदियां और नहरें सभी अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं यो खो चुके हैं। लाखों गांवों में पीने के पानी के लाले पड़े हुए हैं। मवेशी मर रहे हैं और खेती सूख रही है। गर्मी का बढ़ता प्रकोप जिंदगी को बदहाल कर दिया है। महाराष्ट्र, राजस्थान, तेलंगाना, गुजरात, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तप्रदेश, झारखंड, हरियाणा, पंजाब, तमिलनाडु जैसे अनेक राज्यों की हालात अत्यंत भयावह होती जा रही है। कहीं सूखे ने बदहाल किया है तो कहीं बरसात ने। कहीं तूफान ने तो कहीं बाढ़ ने। गांव से बदहाली के चलते लगातार पलायन जारी है।

गांवों में जो समरसता, भाईचारा, सुचिता और सद्भावना हुआ करते थे वहां बाजार आकर खड़ा हो गया है। सारे रिश्ते, बाजार से तय होने लगे हैं। दूध तो दूध पानी भी बिकने लगे हैं। चौपाल में चलने वाली बैठकें, ठहाकें, किस्से और लोकगीत नये बाजार के भेंट चढ़ गए हैं। गंवई सुख की जगह बाजारु तनाव लोगों के माथे पर साफ देखा जा सकता है। बाजार ने गांव के हर व्यक्ति को आर्थिक प्रलोभन देकर अपने चंगुल में फंसा लिया है। इसी ने गांव को भी स्वार्थ, छल, प्रपंच, झूठ, हिंसा, ठकाई और आराम तलबी में रहना सीखा दिया है। गांवों के वाद्य यंत्र, कलाकार, गीत और कहकहें अपसांस्कृतिक बाजारवाद के शिकार बन गए।

आजादी के बाद सैकड़ों नये कस्बे और शहर अस्तित्व में आए हैं। वह सभी गांवों को बलि देकर। शहरों के ५० किमी. तक के गांव आज शहरों की प्रदूषित हवा, अपसंस्कृति और बचकानेपन में खपते जा रहे हैं। इसे विकास का नाम दिया जा रहा है। गांवों में आज कृषि सबसे उपजाऊ कार्य है जिसे गांव का कोई नौजवान नहीं करना चाहता है। इसलिए वह रोजगार की तलाश में शहर की ओर भागता है और कमरतोड़ मेहनत के बाद भी उसी बदहाली में रहने के लिए अभिशप्त है। खेती करना पिछड़ेपन की निशानी हो गई है। हिंदी या उसकी मातृभाषा अब उसके लिए हीनभावना का सबब बनती जा रही है। यह सब बाजारी विज्ञापनों का असर है जिसे धीमे जहर की तरह गांव के प्रत्येक व्यक्ति के नश-नश में अखबारों, टीवी सीरियलों और फिल्मों के द्वारा चढ़ाया जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने बहुत चालाकी और योजनाबद्ध तरीके से मीडिया के जरिए भारत के गांवों को खत्म करने का जो अभियान २५ वर्ष पहले चलाया था, उसका असर पूरी तरह से दिखाई पड़ने लगा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत के गांवों को और वहां की जाति आधारित परम्परागत रोजगार को तोड़ने के लिए जो योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया, उसका प्रतिफल है आज गांवों से जातिगत रोजगार लगभग खत्म हो गए हैं।

भारत के किसी भी गांव में चले जाइए, चारों तरफ फांय-फांय की एक हांफने वाली आवाज सुनाई पड़ती है। ऐसा लगता है, गांव बूढ़े हो गए हैं। उनके अंदर की शक्ति, शुचिता, सामर्थ्य और शांति खत्म हो गई है। न लोगों के आंखों में पानी बचा है और न ही जीवन ही। यदि कुछ दिखाई पड़ता है तो वह बाजार और केवल बाजार। बाजार की विडम्बना और संवदेनहीनता। जिसे विकास का नाम देकर आगे बढ़ाया जा रहा है।

पता : ए-११ त्यागी विहार, नांगलोई, दिल्ली-११००४१

विश्लेषणात्मक

"महर्षि का वेद-भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है"

- ले. खुशहालचन्द्र आर्य

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित "यजुर्वेद सन्देश" पुस्तिका से उद्धृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत् के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान है। सभी आर्यजन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते है। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रुप से जुड़े हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व. पिता गोविन्दराम आर्य (प्रधान जी) की पुण्य स्मृति में "आदर्श आर्य प्रवर" शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी। उसका सम्पादन डॉ. साहब ने ही किया था, जिसकी सभी लोगों ने बड़ी प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के लोकार्पण के समय सोमदेव जी मेरे गांव देवराला (हरियाणा) भी गये थे। मेरे पूरे परिवार से इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है। कलकत्ता में मेरे घर को भी इन्होंने कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे पूरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक "यजुर्वेद सन्देश" को पढ़ने से इनकी प्रकाण्ड विद्वता का परिचय मिल जाता है। इस पुस्तक के पढ़ने से सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द का वेद भाष्य, अन्य भाष्यकारों से कहीं अधिक सार्थक और सही है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। पहले से भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्मकाण्ड के ही मानते थे। परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्मकाण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ है। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव मात्र का बड़ा उपकार व कल्याण किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो लेख लिखा है, इसे पढ़कर मैं आशा करता हूं कि सुधि पाठकगण वेदों के सही स्वरुप को समझ पायेंगे। यही मेरी उपलब्धि होगी। लेख इसी भांति है।

१. मध्यकालीन वेद भाष्यकार :- मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं, जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाय किया है। विक्रम संवत ६८७ में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के ४-५ सूत्रों का आधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेदभाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही उद्‌गीथ हुए हैं, उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पांचवे सूक्त के चौथे मन्त्र से ८६ सूक्त के ६ मन्त्र तक वेद भाष्य किया। यह भाष्य भी कर्मकाण्ड परक ही है। विक्रम संवत् की १२वीं शताब्दी में वेंकट माधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की १३वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के १६४ सूक्त) का आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने (विक्रम संवत् १२५५-१३३५) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् १३७२-१४४२) ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियाज्ञिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी दिये हैं।

उव्वट (विक्रम संवत ११००) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत् १६४५) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार दिया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गोमेध, अश्वमेधादि शब्दादि का अनर्थ करके पशु हिंसा जैसे जघन्य कृत्य को यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैतिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने विक्रम संवत् ११०० में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् १३६० के लगभग किया, कर्मकाण्ड परक अर्थों के साथ-साथ कहीं-कहीं अध्यात्म परकअर्थ भी किये। माधव जो विक्रम संवत शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रान्थों

के प्रमाण भी उद्धृत किये । भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया। अथर्ववेद का मध्यकालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भष्य किया। इसमें भी उन्होने मन्त्र-तन्त्र, जादू-टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि ग्रन्थों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रुप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इनमें भी पशु हिंसा, मांस-भक्षण, जादू-टोना, मारम-उच्चाटन, अग्नि-इन्द्रादिदेवताओं का शरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख, ऐश्वर्यों को भोगना, यज्ञ की हानि (आहूति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृष्य रुप में यज्ञ स्थल पर अपना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचार धारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य भी किया, जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिये ही हैं जो याज्ञिक कर्मकाण्ड कराते हैं, इसी प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिये ही उपयोगी है। यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रुचि हट गई। वेद कथा, वेद प्रवचन प्रचारादि के स्थान पर भगवत गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि प्रचलित हो गये।

पाश्चात्य विद्वान :- आधुनिक युग (१८वीं, १९वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरित्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् १८५० में डॉ. एच.एच विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। प्रो. मेक्समूलर ने रुद्र, मारुत, वायु आदि देवताओं के सूक्तों का कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान् ग्रासमान ने सन् १८७६-१८७७ में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान ए. लुडविग, एच. ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर.टी.एच. विद्वान् ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का का अंग्रेजी में अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् १८४८ में) सामवेद (कौथुम शाखा) का जर्मन अनुवाद किया। अथर्ववेद (शौनक संहिता) का डब्लू. एच. ----- ने तथा अथर्ववेद (पैप्सलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् १९०१ में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेश में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्द :- महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में वेदों का प्रचार-प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डना करना, शंका-समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न-बाधाओं का सहन करना, दिन-रात प्रचार यात्रा करना, छोटे-बड़े ४३ ग्रन्थों को लिखना, अपने आप में एक अद्भुत कार्य उन्होने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने इन पर ईंट-पत्थर फेंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगाई, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फेंका आदि दुष्कृत्य किये, किन्तु गुरु भक्त एवं प्रभु विश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से कभी विचलित नहीं हुए और गुरु को दिया वचन उन्होने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उत्वर और महीधर ने गो मेध, अश्वमेध, नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के ७ से २२वें मन्त्र तक पशु को बांधना, देवता के लिये उसका वध करना, आहुति देने का भयानक चित्रण किया है। साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिये की गयी हिंसा, हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गये। महर्षि दयानन्द ने पशुओं की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को अघ्न्या अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गो मेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं, अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है, अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शब का अन्त्येष्टि संस्कार को नर मेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

पता : गोविन्दराम आर्य अण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड दो तल्ला, कोलकाता - ७००००७

वेद प्रचार अभियान में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के बढ़ते चरण

सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के क्रान्तिकारी प्रयास

सभा को सशक्त बनाने की दिशा में उठाए महत्वाकांक्षी कदम

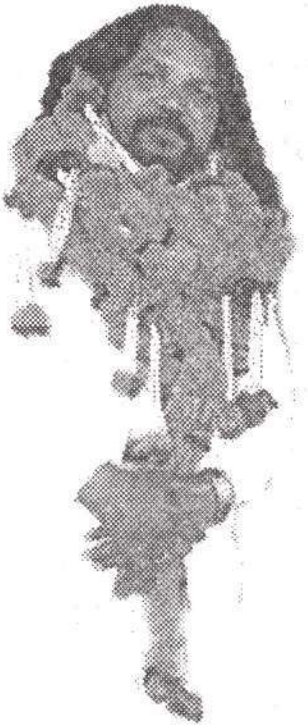

विगत २३ सितम्बर २०१२ से लेकर अब तक छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की बागडोर सम्भालने वाले गुरुकुल कालवा के सुयोग्य स्नातक आचार्य बलदेव जी सहित अनेक आचार्यों के सान्निध्य में आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करने वाले आचार्य अंशुदेव आर्य जी ने एक सच्चे मिशनरी की भांति सभा को विपरीत परिस्थितियों से उबारकर आर्यजगत् में अपनी स्वर्णिम उपलब्धियों के साथ स्वनामधन्य महर्षि के मन्तव्यों को वेद के पावन सिद्धान्तों को सामाजिक सरोकारों से जोड़ते हुए अनगिनत गतिविधियों का सफल संचालन कर एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

आइए इस तेजस्वी युवा के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के हित में समग्रता एवं प्रामाणिकता के साथ की गई एवं वर्तमान में जारी उल्लेखनीय सेवाओं की ओर एक नजर डालें :-

(1) छत्तीसगढ़ में नये 15 आर्यसमाजों को मान्यता देकर सम्बद्धता प्रदान की गई। वर्तमान कुल 99 आर्यसमाजें संबद्ध हैं।

(2) जहां पूर्व प्रधानों द्वारा सभा की स्थायी सम्पत्ति/जमीन/भूखंड/मकान/दुकान आदि की बिक्री की गई, वहां वर्तमान प्रधान द्वारा दान में निम्नलिखित स्थानों पर आर्यसमाज के लिये दान में भूमि प्राप्त किया गया - (1) आर्यसमाज बड़ेपन्धी 25 डि.मी., डेढ़ लाख रुपये आर्यसमाज मंदिर हेतु दिया गया (2) आर्यसमाज कांसा 43 डि.मी., डेढ़ लाख रुपये आर्यसमाज मंदिर हेतु दिया गया (3) आर्यसमाज बघौद 23 डि.मी., डेढ़ लाख रुपये आर्यसमाज मंदिर हेतु दिया गया (4) आर्यसमाज पुसौर 2 डि.मी. जमीन पर दो कमरायुक्त पक्का मकान (5) आर्यसमाज लोभनीपारा कोड़ासिया 13 डि.मी. डेढ़ लाख रुपये आर्यसमाज मंदिर हेतु दिया गया (6) आर्यसमाज मुड़ागांव 15 डि.मी., डेढ़ लाख रुपये आर्यसमाज मंदिर हेतु दिया गया (7) आर्यसमाज पंगसुवा 23 डि.मी., डेढ़ लाख रुपये आर्यसमाज मंदिर हेतु दिया गया (8) आर्यसमाज लेंजाखार डेढ़ एकड़, डेढ़ लाख रुपये बाऊंड्रीवाल के लिए शीघ्र दिया जाने वाला है (9) आर्यसमाज कबीरधाम (कवर्धा) 62 डि.मी., मुख्यमंत्री कोष से 3 लाख रुपये मंजूर किया गया है, भवन निर्माण प्रारंभ हो चुका है।

(3) रायगढ़ शहर के मध्य में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपकार्यालय हेतु तीन मंजिला पक्का भवन, जो कि लगभग 3,300 वर्गफुट में आठ कमरों एवं समस्त प्रसाधन युक्त लगभग 9 डि.मी. भूभाग में निर्मित 50 लाख से अधिक मूल्य का भवन, मात्र 25 लाख रुपये में श्री चक्रधर पटेल से खरीदी गई, जिसमें सभा द्वारा केवल 15 लाख रुपये देकर सभा के नाम मकान की रजिस्ट्री कराने के बाद कब्जा प्राप्त किया जा चुका है।

(4) पुराना सभा वाहन जो दिसम्बर 2007 में क्रय की गई थी, को मरम्मत करने के बाद नया स्वरुप प्रदान कर, वेद प्रचार कार्य में सन्नद्ध किया गया।

(5) दिनांक 3 जुलाई 2015 को लगभग सवा दस लाख रुपये में नया सभा वाहन (स्कार्पियो) नगद दाम खरीदा गया, जिससे सभा की गतिविधियों में गति प्रदान की जा सकेगी।

(6) निम्नलिखित न्यायालयीन प्रकरण जो कि वर्षों से लंबित थी, उसके निपटान में ध्यान देकर, परिश्रम करके सभा के पक्ष में फैसला प्राप्त हुआ, जैसे - (1) रमेश कुमार चावला दुर्ग (2) खेमचंद जैन धमतरी (3) श्री शिव कुमार देवांगन सुंगेरा प्रकरण में विजय हासिल कर साढ़े सत्रह एकड़ कृषि भूमि पर कब्जा हासिल किया गया।

(7) ग्राम सेमरिया में प्रकरण सभा के पक्ष में फैसला होने पर साढ़े 12 एकड़ कृषि भूमि पर कब्जा प्राप्त किया गया।

(8) ग्राम गोबरा स्थित साढ़े 12 एकड़ कृषि भूमि पर कब्जा प्राप्त किया गया।

(9) आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के स्वयंभू प्रधान कमलनारायण द्वारा दायर याचिका में फैसला सभा के पक्ष में आया।

(10) आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के द्वारा चैरिटि कमिश्नर नागपुर में दायर याचिका में सभा के पक्ष में फैसला प्राप्त हुआ।

(11) कृषि योग्य भूमि का रकबा निम्न स्थानों पर बढ़ा -

(अ) ढाबा में 40 एकड़ परिया भूमि को धनहा में परिवर्तित करके रेग पर दिया गया।

(ब) ग्राम गोबरा सेमरिया के वर्षों से लंबित 25 एकड़ भूमि पर सभा को कब्जा प्राप्त हुआ।

(स) ग्राम सुंगेरा के वर्षों से लंबित साढ़े 17 एकड़ भूमि पर सभा को कब्जा प्राप्त हुआ।

(द) ग्राम कूंरा के लगभग 65 एकड़ पड़ती भूमि का परिया तोड़ने का अनुबंध सम्पन्न हुआ। दो वर्ष के बाद रेग पर भूमि दी जा सकेगी।

(12) धमतरी के सन् 1998 से लंबित किरायानामा अनुबंध निष्पादन करके, किराया चौगुना बढ़ाकर 3 वर्षों के लिए किरायानामा अनुबंध निष्पादन कर, लगभग एक लाख रुपये लंबित किराया वसूल किया गया।

(13) टाटीबन्ध रायपुर स्थित पांच दुकानों का सन् 2001 से लंबित किरायानामा अनुबंध करके किराया दोगुना बढ़ाया गया एवं बढ़ा हुआ किराया वसूल किया गया।

(14) देना बैंक टाटीबन्ध जो कि केवल 9000 प्रतिमाह किराये पर था, उसका किराया 65 हजार रु. प्रतिमाह बढ़ाकर किरायानामा अनुबंध किया गया।

(15) मकई चौक धमतरी में होर्डिंग (विज्ञापन बोर्ड) जो पहले चार-पांच हजार रुपया वार्षिक में दी जाती थी, उसे 80 हजार रुपये वार्षिक किराया अनुबंध करके प्रतिवर्ष दस प्रतिशत किराया बढ़ाने का तीन वर्षीय अनुबंध निष्पादन कर, इस प्रकार सभा के आय को कई गुना बढ़ाया गया।

(16) दानवीर तुलाराम आर्य सभा बांड़ा लवन के वर्षों पुरानी कवेलू वाला छप्पर हटाकर 90 फुट लंबा एवं 35 फुट चौड़ा पक्का लेंटर ढलाई किया गया, जिसमें लगभग 8 लाख रुपये खर्च हुआ। दिनांक 27 अगस्त 2015 को लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ।

(17) स्वामी अग्निदेव आर्य कन्या विद्यालय मकई चौक धमतरी में सात कमरों वाला पक्का भवन का निर्माण

रोटरी क्लब धमतरी के सहयोग से सभा द्वारा किया गया, जिसमें 30 लाख रुपये व्यय हुआ, जिसमें सभा द्वारा केवल साढ़े 6 लाख रुपया व्यय किया गया। नवनिर्मित विद्यालय भवन के 5 कमरों में टेबल, कुर्सी आदि फर्नीचर से सुसज्जित किया गया, प्रसाधन के साथ सीढ़ी का निर्माण भी किया गया है, आंगन में एक नलकूप खनन कर जलापूर्ति सुलभ कराया गया है।

(18) स्वामी अग्निदेव आर्य कन्या विद्यालय धमतरी के प्रांगण में विधायक निधि से प्राप्त 3 लाख रुपये द्वारा विद्यालय कक्ष का निर्माण सम्पन्न हो गया है, जिसका रंगरोगन फिनिशिंग कार्य चल रहा है, जिसका शीघ्रातिशीघ्र लोकार्पण किया जाना संभावित है।

(19) फसल उत्पादन में जहां ढाबा, कूंरा, लवन से 15-16 लाख रुपये प्रतिवर्ष प्राप्त होता था, उसके स्थान पर विगत तीन वर्षों में 45 से 50 लाख रुपये प्रतिवर्ष प्राप्त होने लगा है। इस प्रकार फसल उत्पादन से प्राप्त होने वाली आय में तिगुनी वृद्धि हुई है।

(20) सभा बाड़ा कूंरा एवं ढाबा में सात नलकूप खनन किया गया है एवं फसल की सुरक्षा के लिये फेनसिंग किया गया है, जिससे अधिक रेट में रेगहा से धान रबी और खरीफ की फसल से आय में दो से तीन गुनी वृद्धि की गई है।

(21) पिछले 10 वर्षों में जितनी आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा सका, उससे कहीं अधिक शिविरों का आयोजन विगत तीन वर्षों में निम्नलिखित स्थानों पर किया गया- दुर्ग, भिलाई, रायपुर, चन्द्रपुर, कांसा, कोरबा, पोंड़ी, लेंजाखार, लैलूंगा, सलखिया, पत्थलगांव, सिलफिली, विश्रामपुर (डी.ए.वी.), भटगांव डी.ए.वी., सरिया आदि।

(22) वेद प्रचार कार्यक्रम पहले की अपेक्षा विगत तीन वर्षों में कई गुना अधिक सम्पन्न हुआ। जैसे -

(1) राजिम कुंभ मेला में भव्य वेदप्रचार उपदेशकों, भजनोपदेशकों एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया, जिसमें पं. दिनेश दत्त जी आदि सुप्रसिद्ध भजनोपदेशकों के सौजन्य से वेद प्रचार कार्यक्रम सफल रहा।

(2) शिवरीनारायण मेला में भी उपरोक्तानुसार वेदप्रचार का सफल आयोजन किया गया।

(3) रायगढ़ संभाग के सभी आर्यसमाजों में तथा अन्य आर्यसमाजों में सघन वेदप्रचार का कार्यक्रम प्रतिवर्ष सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

(23) महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबंध रायपुर में संस्कृत विद्यालय एवं वेद विद्यालय का जहां सफल संचालन किया जा रहा है, वहां महर्षि दयानन्द आर्य उ. मा. विद्यालय एवं अंग्रेजी माध्यम से विद्यालय का सफल संचालन किया जा रहा है।

(24) आर्यनगर के ओमपरिसर एवं दयानन्द परिसर के दुकानों से लगभग दस वर्षों से लंबित किराया लगभग 10 लाख रुपये वसूल किया गया और सभा के आय में उत्तरोत्तर वृद्धि की गई।

(25) वर्तमान प्रधान द्वारा एक इंच जमीन की न तो बिक्री की गई और न ही रजिस्ट्री की गई, अपितु 50-60 एकड़ जमीन सभा को प्राप्त हुई है। ऐसा सन् 1926 के बाद आज तक नहीं हुआ।

(26) सन् 2012 में जहां 14 लाख रुपये की एफ.डी.आर. थी, उसके स्थान पर वर्तमान में सभा के पास 23 लाख रुपये की एफ.डी.आर. है। पूर्व प्रधान के कार्यकाल में लगभग 21 लाख रुपये का एफ.डी.आर. तोड़ा गया था।

(27) सभा का मासिक मुख पत्र अग्निदूत, जो पहले 7-8 सौ प्रति प्रतिमाह प्रकाशित होता था, उसे बढ़ाकर 1200 प्रति प्रतिमाह प्रकाशित की जा रही है। जो पहले 17 हजार रुपये प्रतिमाह पत्रिका प्रकाशन में खर्च होता था, उसे घटाकर 10 हजार रुपये प्रतिमाह पत्रिका प्रकाशन में खर्च हो रहा है। डाक टिकट पहिले दो रुपया एक अग्निदूत के प्रेषण में लगता था, उसे घटाकर 25 पैसे डाक प्रेषण शुल्क अदा किया जा रहा है। सन् २०१५ में नया आफसेट प्रिंटिंग मशीन क्रय किया गया है, जिसमें अग्निदूत पत्रिका एवं अन्य वेदप्रचारार्थ सामग्री का प्रकाशन कार्य निरन्तर जारी है।

(28) धमतरी, रायपुर एवं दुर्ग स्थित भवनों का लाखों रुपये का सम्पत्ति कर (प्रापर्टी टैक्स) माफ कराया गया और सभा का लाखों रुपये की हानि से बचाया गया, जबकि पूर्व प्रधान के कार्यकाल में रायपुर एवं धमतरी में प्रापर्टी जमा की गई थी।

द्वितीय कार्यकाल

११ अक्टूबर २०१५ को पुनः भारी मतों से आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान निर्वाचित होने के बाद पुनः सभा के मूल उद्देश्य वेद प्रचार अभियान को लक्ष्य में रखकर छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में रायगढ़ जिला, दुर्ग जिला व अन्य क्षेत्रों में २० से अधिक गांवों में अपनी टीम भेजकर एक तक सघन वेदप्रचार किया। टाटीबन्ध रायपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, दुर्ग घनश्यामसिंह जयन्ती, रायगढ़ जिले के अनेक गांवों में वेद प्रचार, महासमुन्द जिले के अनेक क्षेत्रों में वेद प्रचार, दुर्ग जिले में दानवीर दाऊ तुलाराम परगनिहा आर्य का मूर्ति अनावरण माननीय मुख्यमंत्री के हाथों सम्पन्न कराया। दिनांक १५, १६ व १७ जनवरी २०१६ को गुरुकुल आश्रम सलखिया के भव्य रजत जयन्ती समारोह को गरिमामय सम्पन्न कराया। बलौदाबाजार जिले के गणेशपुर ग्राम में वैदिक सत्संग सम्पन्न कराया। फरवरी २०१६ में १०० विकलांग जोड़ों का विवाह संस्कार सम्पन्न कराया। २२ फर. से ७ मार्च १६ तक राजिम कुंभ में विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत कथा के द्वारा हजारों श्रद्धालुजनों को प्रेरित किया, हजारों सत्यार्थ प्रकाश की बिक्री मात्र १०-१० रुपये में की। मार्च में धमतरी जिले के अनेक गांवों में वैदिक सत्संग कराया। १० से १७ अप्रैल २०१६ तक रोजड़ गुजरात में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण में भाग लेने हेतु छ.ग. से ४४ शिविरार्थियों को भेजकर वैदिक धर्मनिष्ठ बनाने की दिशा में बड़ा प्रयास किया गया। जिला सूरजपुर में अप्रैल २३ को ११० जोड़ों का विवाह कराया। २४ अप्रैल को पुनः १२४ जोड़ों की शादी कराई। सितम्बर १६ को मठपारा आर्यसमाज में चतुर्वेद शतकम् पारायण महायज्ञ सम्पन्न कराया। रोटरी क्लब रायपुर में जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण वैदिक स्वरुप पर संगोष्ठी को संबोधित किया। नवम्बर १६ में कबीरधाम जिले के ५०० गांवों में पतंजलि समिति के साथ बच्चों के बीच नैतिक शिक्षा का अभियान चलाया। जन. २०१७ को कोरबा में आर्यवीरांगना प्रशिक्षण शिविर का संचालन किया, जिसमें शताधिक छात्राएँ लाभान्वित हुई। इसी माह ग्राम कांसा में कृषक सम्मान समारोह आयोजित कराया, जनवरी में हिन्दू आध्यात्मिक सेवा मेला, वी.टी.आई. शंकर नगर रायपुर में हजारों की संख्या में प्रचार पत्रक एवं सत्यार्थ प्रकाश वितरित कर वेदप्रचार का कार्य किया गया।

इस प्रकार पिछले २ कार्यकाल से वर्तमान पर्यन्त आचार्य अंशुदेव जी आर्य के नेतृत्व में उनकी ऊर्जावान टीम के द्वारा प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में तथा सभा सम्बद्ध समस्त इकाईयों के सशक्तीकरण की दृष्टि में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये।आपके नेतृत्व में सभा समर्थ एवं सशक्त होकर अपने उद्देश्यों को पाने में निरन्तर प्रयत्नशील रही, आगे भी अनेक उज्ज्वल संभावनाओं की अपेक्षा आर्यजनता करती है।

जीवन-दर्शन

असफलता की सम्भावना को नजरअंदाज न करें.

★ ओमप्रकाश बजाज

असफलता की सम्भावना के लिए भी स्थान रखें हम अपनी योजनाओं में, कार्यक्रमों में, सोच में, तो निराशा नहीं होगी। कुण्ठा नहीं होगी। विचार कर देखिए, हम कोई भी योजना बनाते हैं, कार्यक्रम निश्चित करते हैं तो अक्सर यह मान कर चलते हैं कि हम उसमें सफल ही होंगे। सकारात्मक सोच कोई बुरी बात नहीं है किन्तु व्यवहारिकता के भी कुछ अपने तकाजे होते हैं। वस्तुस्थिति यह है कि किसी भी योजना, कार्यक्रम, उपक्रम की सफलता असफलता विभिन्न परिस्थितियों, कारणों, अवसरों, संयोगों आदि पर निर्भर होती है। कुछ ऐसे बाहरी कारण भी होते हैं जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता। चाहते न चाहते थोड़ा बहुत भाग्य का हाथ भी माना जाता है। ऐसे में निश्चित रुप से सफलता की आशा करना ठोस वास्तविकता की कसौटी के अनुरुप नहीं माना जा सकता। सफलता का ऐसा दृढ़ विश्वास असफलता की दिशा में हमें निराशा के गहरे अंधेरे कुएँ में धकेल सकता है।

जीवन को भी एक खेल कहा जाता है। खेल में जीत भी होती है और हार भी। विशुद्ध खेल भावना से खेलने वाला खिलाड़ी हार को भी सामान्य ढंग से, सहज रुप में लेता है। निराश अथवा कुण्ठित नहीं होता। असफलता कोई अनहोनी बात नहीं है। सफलता और असफलता में से हाथ तो कोई एक ही आनी है। ऐसे में असफलता को दरकिनार नजरअंदाज कर देना व्यवहारिक नहीं कहा जा सकता। हम ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं कि हमें हर कार्य में हर बार सफलता ही मिलती जाएगी। संतुलित सोच खिन्नता, निराशा, विषाद से बचाती है, हम यह मान कर चलें कि हमारे प्रयास असफल भी हो सकते हैं तो वास्तव में असफल होने पर हमें वह मानसिक आघात नहीं लगेगा जो ऐसी स्थिति में लगता है। कहते हैं ना फोरवार्न्ड इज फोरआर्म्ड अर्थात् पहले से खबरदार जैसे पहले से तैयार।

अपनी सोच में परिवर्तन लाइए, असफलता की सम्भावना को दरकिनार और नजरअंदाज मत कीजिए। उसे भी उसका स्थान दीजिए। बेकार की निराशा से बचिए।

पता-बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर - ४८२००१ (म.प्र.)

सम्मति न दीजिये

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः।
जानन्नपि हि मेधावी जड़वल्लीकमाचरेत् ॥

भावार्थ - बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि - वह सब कुछ जानते हुए भी बिना पूछे किसी को अपनी राय न दे। कोई व्यक्ति अन्याय से मान लीजिये आप से कुछ पूछता है, आप जड़वत् आचरण करने लग जाइये। ऐसे कि- जैसे आप उस विषय में कुछ जानते ही नहीं है। सामने वाला आपको मूर्ख समझ रहा है और आप उसके सम्मुख मूर्ख बनकर भी उपदेश देते रहें यह ठीक नहीं है।

जो आपकी सम्मति का आदर करता हो उसे ही आप अपनी शुभसम्मति दीजिए।

- सुभाषित सौरभ

वे दयानन्द हैं ....

जिसने मिटाया छल छदम् और पाखण्ड
वे दयानन्द है, वे दयानन्द है।

o

विस्तार की दी दृष्टि ,जीवन को दिया सहारा
सत्यार्थ का प्रदर्शन दिया, सन्ध्या का आनंद
वो दयानन्द हैं ...

oo

कुरीतियों में लिपटा, अंधविश्वासों का था बंधन
सत्य का देखे मंत्र ,जीवन के तोड़े बंध
वे दयानन्द हैं...

ooo

मद्य मांसादिकों से दूर हमको बनाया शूर
संसार भर में जिसने फैला दी यज्ञ सुगंध
वे दयानन्द है...

oooo

पुराण वाम पन्थ तीर्थादिकों का छंद
सबकुछ शुभ्र करके वेदों का सुना के छंद
वे दयानन्द हैं ....

ooooo

नारी नहीं है अबला जिसने बनाया पूज्या
विधवा के पोंछे आंसू माँ देवी का दिया पद
वे दयानन्द है ...

- अजीत भोय, रायपुर

- अवसादपूर्ण जीवन को हास चाहिए,
  देश के गद्दारों की लाश चाहिए।
  मुमूर्ष मानवता को सांस चाहिए और
  भारत को फिर से सुभाष चाहिए।
- जिस समय हम किसी का
  अपमान कर रहे होते हैं,
  उस समय हम अपना
  सम्मान खो रहे होते हैं।

शुभकामना

सबकी नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह हो,
गुण, शील, साहस, बल तथा सबमें भरा उत्साह हो।
सबके हृदय में सर्वदा समवेदना की दाह हो,
हमको तुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हो॥

विद्या, कला, कौशल्य में सबका अटल अनुराग हो,
उद्योग का उन्माद हो, आलस्य-अघ का त्याग हो।
सुख और दुख में एक-सा सब भाइयों का भाग हो,
अन्तःकरण में गूंजता राष्ट्रीयता का राग हो॥

कठिनाइयों के मध्य अध्यवसाय का उन्मेष हो,
जीवन सरल हो, तन सबल हो, मन विमल सविशेष हो,
छूटे कदापि न सत्य-पथ निज देश हो कि विदेश हो,
अखिलेश का आदेश हो जो बस वही उद्देश्य हो॥

आत्मावलम्बन ही हमारी मनुजता का मर्म्म हो,
षड्रिपु-समर के हित सतत चारित्र्यरूपी वर्म्म हो।
भीतर अलौकिक भाव हो बाहर जगत का कर्म्म हो,
प्रभु-भक्ति, पर-हित और निश्चल नीति ही ध्रुव धर्म्म हो॥

उपलक्ष्य के पीछे कभी विगलित न जीवन-लक्ष्य हो,
जब तक रहे ये प्राण तन में पुण्य का ही पक्ष हो।
कर्त्तव्य एक न एक पावन दिव्य नेत्र-समक्ष हो,
सम्पत्ति और विपत्ति में विचलित कदापि न वक्ष हो॥

उस वेद के उपदेश का सर्वत्र ही प्रस्ताव हो,
सौहार्द और मतैक्य हो, अविरुद्ध मन का भाव हो।
सब इष्ट फल पावें परस्पर प्रेम रखकर सर्वथा,
निज यज्ञ-भाग समानता से देव लेते हैं यथा॥

"भारत भारती"- मैथिलीशरण गुप्त

आर्यसमाज और अन्तर्जातीय विवाह-वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में

- ले. अर्जुनदेव चड्डा

वैचारिक

मानव-जीवन के चार स्तंभों में गृहस्थ-जीवन का द्वितीय स्थान है। अन्य तीन आश्रम भी इसी पर आश्रित हैं। यह एक उत्तरदायित्वपूर्ण आश्रम है। इसी आश्रम में रहते हुए मानव सन्तानोत्पत्ति से लेकर पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, विवाह आदि समस्त दायित्वों को पूर्ण करता है। इन दायित्वों में सबसे महत्वपूर्ण है - विवाह। यह ऐसा उत्तरदायित्व है जो दो आत्माओं के मिलन का संयोग बैठता है। न बैठ पाने के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस दायित्व के निर्वहन का जिक्र सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में किया है। उन्होंने वर्णानुकूल सुन्दर लक्षणायुक्त कन्या से विवाह करने का निर्देश दिया है।

जहाँ वर्ण है वहाँ जन्मना जाति नहीं। सत्यार्थ प्रकाश बल देता है कि विवाह गुण, कर्म, स्वभावानुसार होने चाहिए। यदि इस तथ्य पर विचार किया जाए तो पता चलेगा कि आर्यसमाजेतर समाजों में विवाह को लेकर अनेक कठिनाइयों हैं। जैसे- जन्मकुंडली का मिलान, मंगला-मंगली का चक्कर, शिक्षा व रोजगार समस्या, खानपान, रहन-सहन, पारिवारिक स्थितियाँ आदि। यद्यपि आज लड़कियों का अनुपात लड़कों से कम है फिर भी लड़की वाले बहुत परेशान हैं। आर्यसमाजेत्तर लोग एक सीमित दायरे में बंधकर, जन्मपत्री मिलाकर अनमेल विवाह कर डाले हैं जिसका परिणाम होता है आजीवन संघर्ष। इस समस्या से आर्यसमाज के लोग भी नहीं बच पाते। वे भी जन्मना जाति के प्रभाव में लड़के-लड़कियों का विवाह स्वजाति में करते हैं, जिससे अनेक समस्याएँ उठ खड़ी होती है। आर्यसमाजी परिवार की लड़की आर्यसमाजेतर परिवार में जाकर पूरा पौराणिक बन जाती है यदि वह परिवार मांसाहारी है तो वह उससे भी नहीं बच पाती। उसे उसी माहौल में जीने को मजबूर होना पड़ता है। यदि आर्यसमाजी परिवार में आर्यसमाजेतर परिवार की लड़की आती है तो आर्य सिद्धान्तों व संस्कारों के अभाव के कारण समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करती है। इससे परिवार में संघर्ष उत्पन्न होता है।

जिनके घरों में युवा लड़के या लड़कियाँ हैं उनके माता-पिता से अनेक विवाह सम्बन्धी कठिनाई का पता किया जा सकता है। लड़कियां ३५-३८-४० साल की हो जाती है अच्छे वर ढूंढने के चक्कर में उम्र समाप्त हो जाती है। यही हाल लड़कों में भी मिल जाएगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट लिखा है कि २४ वर्ष तक कन्या का विवाह अवश्य हो जाना चाहिए।

एक तरफ ऐसा स्पष्ट निर्देश और दूसरी तरफ - उन्होने उल्लेख किया है - **'चाहे लड़का-लड़की मरणपर्यन्त कुमार रहें परन्तु असदृश अर्थात परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए।'** अब लोग जाति के दायरे में सीमित रहेंगे तो निश्चित ही कठिनाईयाँ बढ़ेंगी। ऐसे में युवा-युवती का मन दूषित हो सकता है।

इस दिशा में विगत चार सालों से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया जा रहा युवक-युवती परिचय सम्मेलन एक सराहनीय कदम है। पांचवाँ युवक-युवती परिचय सम्मेलन दिल्ली में जुलाई के प्रथम सप्ताह में होने जा रहा है। आर्यसमाज के लोग यदि इस दिशा में सहयोग करें तो बहुत कुछ लड़के-लड़कियों के विवाह संबंधी कठिनाई दूर हो सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों पर विचार करें- **'सज्जन लोग स्वयंबर विवाह किया करें। सो विवाह वर्णानुक्रम से करें और वर्णव्यवस्था भी गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए।'** स.क्र. ४। ऋषि के शब्दों में कितनी कल्याण भावना है। वे वर्ण व्यवस्था के कितने समर्थक है, उन्हीं के शब्दों में - **'रज वीर्य के योग से ब्राह्मण शरीर नहीं**

होता।' । स.प्र.४ । वे लड़का-लड़की के गुण-कर्म-स्वभाव के मेल पर बल देते हैं। उन्हीं के शब्दों में - **'जब स्त्री-पुरुष विवाह करना चाहें तब विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर का परिमाण आदि यथायोग्य होना चाहिए। जब तक इनका मेल नहीं होता तब तक विवाह में कुछ भी सुख नहीं होता।'** ।स.प्र.४। इतना ही नहीं उन्होने विवाह सम्बन्ध दूर करने पर बल दिया है। दूरस्थ विवाह में प्रेम की डोरी बढ़ी रहती है। दोनों पक्ष के लोग एक दूसरे के गुणावगुणों से अनभिज्ञ रहते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में -**'दूरस्थों के विवाह में दूर-दूर प्रेम की डोरी लम्बी बढ़ जाती है, निकटस्थ विवाह में नहीं।'** । स.प्र. ४ । खानपान, जलवायु आदि की दृष्टि से भी दूरस्थ विवाह उत्तम है। महर्षि जी के ही शब्दों में - **'दूर देशस्थों के विवाह होने में उत्तमता है।'**। स.प्र.४। हम आर्य समाज के लोग ऋषि की भावनाओं और उनकी कल्याणकामना को समझें। आज विवाह की समस्या इतनी विकट होती जा रही है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसका समाधान अन्तर्जातीय विवाह से ही सम्भव है। जो गुण, कर्म, स्वभाव से गृहीत है। यदि अपनी जाति में विवाह होने पर पति-पत्नी में संघर्ष है वह अच्छा है या अन्तर्जातीय विवाह में गुण, कर्म, स्वभावानुसार सुखभोग अच्छा है ? विपरीत स्वभाव वालों में विवाह का सर्वथा निषेध है। महर्षि दयानन्द के शब्दों में - **"कन्या को मरने तक चाहे वैसी ही कुमारी रखो, परन्तु बुरे मनुष्य के साथ विवाह न करो।"** उपदेश मंजरी ॥३॥

इस दिशा में हम आर्यसमाज के लोग सक्रिय कदम नहीं उठा पा रहे हैं व दुःख झेल रहे हैं। विरोधाभास साक्षात् देख रहे हैं। पर साहस नहीं कर पा रहे हैं। हमारा आर्यसमाज एक परिवार है। हम एक-दूसरे से भावनात्मक सम्बन्ध से जुड़े हुए हैं। केवल कथनमात्र से कुछ नहीं होता। हमारा कार्य दूसरों के लिए बहुत बड़ा उपदेश है। आचरण और कर्म की भाषा मौन उपदेश देती है, जो बहुत प्रभावकारी होती है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा उठाया जा रहा यह कदम निश्चय ही भविष्य में अच्छा परिणाम देगा। रोटी और बेटी का सम्बन्ध आर्यसमाज के लिए सुखद भविष्य है। इससे हमारा दायरा विस्तृत होगा। हम एक दूसरे के निकट आएंगे। हमें सांस्कारिक लड़के-लड़कियाँ मिलेंगी। परिवार में सुख-शान्ति हो - इसके अलावा और क्या चाहिए? हमारी जाति आर्य, हमारा धर्म-वैदिक, हमारा राष्ट्र-आर्यावर्त्त, हमारा नाम आर्य, हमारा उपास्य देव ओ३म्- यही तो हमारी पहचान है। इसे बनाना है। यदि हम लोग परस्पर लड़के-लड़कियों का विवाह करना प्रारम्भ कर दें तो देश में आमूलचूल परिवर्तन आएगा और जन्मना जाति-पाँति मिट जाएगी। इसे मिटाना अति आवश्यक है अन्यथा हम परस्पर विभक्त होते जाएंगे और हमारी राष्ट्रिय एकता खतरे में पड़ जाएगी। इसके लिए अन्तर्जातीय विवाह एक सशक्त माध्यम है।

आर्यसमाज आर्यों का समाज है। हम अपने समाज में विवाह सम्बन्ध करें। इससे रूढ़ियाँ मिटेंगी, दिखावा समाप्त होगा, योग्य लड़के-लड़कियों का दायरा बढ़ेगा तो विवाह संबंधी समस्या स्वतः समाप्त हो जाएगी, अमीरी-गरीबी की खाई पटेगी, हमारा परिवार बड़ा होगा, अच्छे सम्बन्धों से मन में प्रसन्नता बढ़ेगी। गृहस्थ जीवन स्वर्ग के समान होगा। गुरुकुलों के आचार्य/आचार्या से निवेदन है कि वे गुरुकुल के स्नातक/स्नातिका का ऐसा सम्बन्ध बनाएं जिससे गुरुकुल के लड़के-लड़कियों का परस्पर विवाह संबंध हो सके। वे इस दिशा में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। विवाह में विचारों का मेल परमावश्यक है। यदि गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त युवक को अन्य कान्वेंट/विद्यालय से शिक्षा प्राप्त पौराणिक लड़की से विवाह होता है तो उसके जीवन में संघर्ष होगा। इसी प्रकार गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त लड़की का विवाह यदि कान्वेंट/विद्यालय से शिक्षा प्राप्त लड़के से होगा तो उसके भी जीवन में संघर्ष होगा। कारण यह है कि गुण, कर्म, स्वभाव मेल नहीं खाता है। वैदिक विचारधारा का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो, इसलिए यह विवाह सम्बन्ध वैदिक विचारों के अनुरूप होना चाहिए।

आर्यसमाज को अपना आदर्श दिखाना होगा। योग्य स्त्री-पुरुषों से योग्य आदर्श समाज बनेगा जिसका

माध्यम अन्तर्जातीय विवाह है । मेरे सामने कितने अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुए हैं और वे युवक-युवती सुखद जीवन व्यतीत कर रहे हैं और कितने ऐसे जातीय विवाह हुए हैं जिनके मध्य संघर्ष है। जन्म कुण्डली, मंगली-मंगला, राशि, ग्रह, मुहूर्त, शुभवाद, अच्छा-बुरा दिन, नाड़ी मेल सबको तिलांजलि देकर समाज के समक्ष सत्य को प्रतिष्ठापित करना होगा। यह युग की मांग है। जिसके भी घर में विवाह योग्य लड़के-लड़कियां हैं वे परिचय सम्मेलन हेतु रजिस्ट्रेशन अवश्य करावें। इससे योग्य लड़के-लड़कियों का मिलन होगा। यदि सम्मेलन में नहीं जा सकते तो कम-से-कम बायोडाटा भेजकर वैवाहिक पुस्तिका द्वारा संपर्क स्थापित कर सकते हैं। इससे प्रतिनिधि सभा का मनोबल बढ़ेगा और आर्यसमाज एक सकारात्मक कदम की ओर अग्रसर होगा। आर्यों से निवेदन है कि वे इस दिशा में पहल करें। यह ऐतिहासिक कार्य होगा। कहने से कुछ नहीं, सिर्फ करने से होगा। यदि हम महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो अन्तर्जातीय विवाह को स्वीकार करना होगा। इससे एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रांति आएगी। इस क्रांतिकारी आन्दोलन में सहयोग दें। स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों को साकार करें। विवाह को सहज, सुखद बनाएं, संघर्षमय नहीं। यह आर्यसमाज की अन्तरात्मा की पुकार है।

पता : प्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा

महान प्रश्न

कारण पहले या कार्य ?

शेफील्ड और वारविक विश्वविद्यालय के शोधकर्त्ताओं ने दावा है कि उनके पास इस सवाल का जवाब है। धरती पर अण्डा से पहले मुर्गी का जन्म हुआ था। कम्प्यूटर मॉडलिंग का उपयोग करते हुए एक प्रोटीन का पता लगाया है, जिसे ओसी १७ या फिर ओवोक्लाइडीन १७ के नाम से जाना जाता है। यह प्रोटीन ही अण्डे का खोल तैयार करने में सहायता करता है और यह प्रोटीन सिर्फ मुर्गी के शरीर के एक हिस्से (अण्डाशय) से ही पैदा होता है। पहिले मुर्गी आई फिर अण्डा पैदा हुआ।

लेकिन मुर्गी कहाँ से आई ? इसका जवाब भौतिक या रसायन विज्ञानी के पास नहीं अपितु आध्यात्म विज्ञानी के पास है। जब सर्गारंभ होता है तब परमात्मा की प्रेरणा से सत्व-रजस-तमस् की साम्यावस्था वाली प्रकृति में हलचल होती है और असाम्यावस्था उत्पन्न होकर महत् (बुद्धि) की रचना तत्पश्चात् अहंकार (Differentiation)क्रमशः सात्त्विक अहंकार से मन तथा दस इन्द्रियाँ, तमस् अहंकार से पंच तन्मात्रा (सूक्ष्मभूत) तत्पश्चात् स्थूलभूत की उत्पत्ति होती है। परमात्मा की प्रेरणा से आवश्यक तत्वों का एकत्रीकरण होकर प्रत्येक जीवधारी के शरीर का निर्माण और सृजन अमैथुनी पद्धति से होती है। सर्गकाल में यथातथ्य मैथुनी सृष्टि का क्रम चल पड़ता है। मुर्गी का शरीर प्रथम बना फिर अण्डा बना। कारण से कार्य का समुद्भव होता है।

आवश्यक है कि हम पृथ्वी-वासी पर्यावरण को दूषित न करें छिन्न न करें, अन्यथा हमें उनसे अवगुण ही प्राप्त होंगे। यह वैदिक ऋषियों द्वारा प्रस्तुत एक ऐसा सत्य है जिसकी वर्तमान में अवहेलना कर हम पर्यावरण संतुलन को समाप्त करते जा रहे हैं।

२३ जुलाई जयंती

पुण्य स्मरण

भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक व समाज सुधारक - बालगंगाधर तिलक

- अनिल आर्य

तिलक का जन्म २३ जुलाई १८५६ को ब्रिटिश भारत में वर्तमान महाराष्ट्र स्थित रत्नागिरी जिले के एक गांव चिखली में हुआ था। ये आधुनिक कालेज शिक्षा पाने वाली पहली भारतीय पीढ़ी में थे। इन्होने कुछ समय तक स्कूल और कालेजों में गणित पढ़ाया। अंग्रेजी शिक्षा के ये घोर आलोचक थे और मानते थे कि यह भारतीय सभ्यता के प्रति अनादर सिखाती है। इन्होने दक्खन शिक्षा सोसायटी की स्थापना की ताकि भारत में शिक्षा का स्तर सुधरे।

जन्म से केशव गंगाधर तिलक, एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और एक स्वतन्त्रता संग्रामी सेनानी थे। ये भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुये, ब्रिटिश औपनिवेशक प्राधिकारी उन्हें "भारतीय अशान्ति के पिता" कहते थे। उन्हें लोकमान्य का आदरणीय शीर्षक भी प्राप्त हुआ, जिसका अर्थ है लोगों द्वारा स्वीकृत (उनके नायक के रुप में) इन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है।

तिलक ब्रिटिश राज के दौरान स्वराज के सबसे पहले और मजबूत अधिवक्ताओं में से एक थे, तथा भारतीय अन्तःकरण में एक प्रबल आमूल परिवर्तनवादी थे। उनका मराठी भाषा में दिया गया नारा **"स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे आणि तो भी मिळवणारच"** (स्वराज्य यह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा) बहुत प्रसिद्ध हुआ। उन्होने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कई नेताओं से एक करीबी सन्धि बनाई, जिनमें बिपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, वो. ओ. चिदम्बरम पिल्लै और मुहम्मद अली जिन्नाह शामिल थे।

तिलक ने मराठी में मराठा दर्पण व केसरी नाम से दो दैनिक समाचार पत्र शुरु किये जो जनता में बहुत लोकप्रिय हुए। तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की। इन्होने मांग की कि ब्रिटिश सरकार तुरन्त भारतीयों को पूर्ण स्वराज दे। केसरी में छपने वाले उनके लेखों की वजह से उन्हें कई बार जेल भेजा गया।

तिलक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुये लेकिन जल्द ही वे कांग्रेस के नरमपंथी रवैये के विरुद्ध बोलने लगे। १९०७ में कांग्रेस गरम दल और नरम दल में विभाजित हो गई। गरम दल में तिलक के साथ लाला लाजपतराय और बिपिनचन्द्र पाल शामिल थे। इन तीनों को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाने लगा। १९०८ में तिलक ने क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया जिसकी वजह से उन्हें बर्मा (अब म्यांमार) स्थित मांडले की जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वे फिर कांग्रेस में शामिल हो गये और १९१६ में ऐनी बिसेन्ट और मुहम्मद अली जिन्ना के साथ अखिल भारतीय होम रुल लीग की स्थापना की।

तिलक ने मराठी में मराठा दर्पण व केसरी नाम से दो दैनिक समाचार पत्र शुरु किये जो जनता में बहुत लोकप्रिय हुए। तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की।

सन् १९१९ ई. में कांग्रेस की अमृतसर बैठक में हिस्सा लेने के लिये स्वदेश लौटने के समय तक तिलक इतने नरम हो गये थे कि उन्होने मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के जरिये स्थापित लेजिस्लेटिव कौंसिल के चुनाव के बहिष्कार की गांधी की नीति का विरोध ही नहीं किया। १ अगस्त १९२० ई. को बम्बई में उनकी मृत्यु हो गयी।

हम कचरा फैलाते रहेंगे, नियम नहीं मानेंगे,
रचनात्मकता का सम्मान नहीं करेंगे
तो अच्छे दिन नहीं आएंगे

२७ जुलाई जयंती

मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति : डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

मधुर स्मृति

अब्दुल पकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम अथवा ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (१५ अक्टूबर १९३१-२७ जुलाई २०१५) जिन्हें मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति के नाम से जाना जाता है, भारतीय गणतन्त्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे। वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जाने माने वैज्ञानिक और अभियंता (इंजीनियर) के रुप में विख्यात थे। इन्होने मुख्य रुप से एक वैज्ञानिक और विज्ञान के व्यवस्थापक के रुप में चार दशकों तक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) संभाला व भारत के नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और सैन्य मिसाईल के विकास के प्रयासों में भी शामिल रहे। इन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में मिसाइल मैन के रुप में जाना जाने लगा।

इन्होने १९७४ में भारत द्वारा पहले मूल परमाणु परीक्षण के बाद से दूसरी बार १९९८ में भारत के पोखरान-द्वितीय परमाणु परीक्षण में एक निर्णायक, संगठनात्मक, तकनीकी और राजनैतिक भूमिका निभाई। कलाम सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी व विपक्षी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों के समर्थन के साथ २००२ में भारत के राष्ट्रपति चुने गए। पांच वर्ष की अवधि की सेवा के बाद, वह शिक्षा, लेख़न और सार्वजनिक सेवा के अपने नागरिक जीवन में लौट आए। इन्होने भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किये।

जन्म १५ अक्टूबर १९३१ को धनुषकोड़ी (रामेश्वरम् तमिलनाडु) में एक मध्यमवर्ग मुस्लिम परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके पिता जैनुलाब्दीन न तो ज्यादा पढ़े लिखे थे, न ही पैसे वाले थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी लगन और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए। पांच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय में उनका दीक्षा संस्कार हुआ था। उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने उनसे कहा था कि *जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीनों शक्तियों को भलीभांति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।*

अब्दुल कलाम ने अपनी आरंभिक शिक्षा जारी रखने के लिए अखबार वितरित करने का कार्य भी किया था। कलाम ने १९५८ में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। १९६२ में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये जहां उन्होंने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी भूमिका निभाई। परियोजना निदेशक के रुप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी ३ के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे जुलाई १९८२ में रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया।

अब्दुल कलाम भारत के ग्यारवें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एन.डी.ए. दल ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया। १८जुलाई २००२को संसद के अशोक कक्ष में राष्ट्रपतिपद की शपथ दिलाई गई। इस संक्षिप्त समारोह में प्रधानमंत्री, अटल बिहारी बाजपेयी, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य तथा अधिकारीगण उपस्थित थे। इनका कार्यकाल २५ जुलाई २००७ को समाप्त हुआ। यूं तो अब्दुल कलाम राजनीतिक क्षेत्र के व्यक्ति नहीं थे लेकिन राष्ट्रवादी सोच और राष्ट्रपति बनने के बाद भारत की कल्याण संबंधी नीतियों के कारण

इन्हें कुछ हद तक राजनैतिक दृष्टि से सम्पन्न माना जा सकता है। इन्होंने अपनी पुस्तक इण्डिया २०२० में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। यह भारत को अंतरिक्ष विमान के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर राष्ट्र बनते देखना चाहते थे और इसके लिए इनके पास एक कार्य योजना भी थी। परमाणु हथियारों के क्षेत्र में यह भारत को सुपर पॉवर बनाने की बात सोचते रहते थे। वह विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी तकनीकी विकास चाहते थे।

राष्ट्रपति दायित्व से मुक्ति के बाद कार्यालय छोड़ने के बाद, कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर व भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलौर के मानद फैलो, व एक विजिटिंग प्रोफेसर बन गए। भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तिरुवनंतपुरम के कुलाधिपति, अन्ना विश्वविद्यालय में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर और भारत भर में कई अन्य शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों में सहायक बन गए। मई २०१२ में कलाम ने भारत की युवाओं के लिए एक कार्यक्रम, भ्रष्टाचार को हराने के एक केन्द्रीय विषय के साथ, "मैं आंदोलन को क्या दे सकता हूँ" का शुभारंभ किया। उन्होंने यहां तमिल कविता लिखने और वेन्नई नामक दक्षिण भारतीय स्ट्रिंग वाद्य यंत्र को बजाने का भी आनन्द लिया।

निधन : २७ जुलाई २०१५ की शाम अब्दुल कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग में रहने योग्य ग्रह पर एक व्याख्यान दे रहे थे जब उन्हे जोरदार कार्डियक अरेस्ट (दिल का दौरा) हुआ और ये बेहोश होकर गिर पड़े। लगभग ६.३० बजे गंभीर हालत में इन्हें बेथानी अस्पताल में आईसीयू में ले जाया गया और दो घंटे के बाद इनकी मृत्यु की पुष्टि कर दी गई।

- ऋषि कुमार आर्य

संदेश

गाय कोई जानवर नहीं है .

गाय कोई जानवर नहीं है ? गाय एक संस्कृति है, गाय एक वैद्यशाला है व हिन्दू ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति की पोशक है। गाय की महिमा पौराणिक व वैदिक ग्रन्थों में बड़े विस्तार पूर्वक वर्णित है। गाय भारतवर्ष के लिए तो एक वरदान है। प्राचीनकाल से भारतवर्ष को गाय समृद्धिशाली बनाती आई है। हमारे ऋषि-मुनियों ने गाय को अपने आश्रमों में प्रमुखता से स्थान दिया।आज विज्ञान ने भी गाय की महत्वपूर्णता को प्रमाणित कर दिया है। गाय का दूध, घी, मूत्र औषधीय गुणों से भरपूर है। भारत वर्ष की अर्थव्यवस्था में कभी गाय अपना महत्वपूर्ण योगदान देती थी, परन्तु आज किसी को गाय की चिंता नहीं है। जिस गाय को मुगलशासन के समय में भी कत्ल नहीं किया जाता था, आज उसी गाय को बीच चौराहों पर बड़ी निर्ममता से काटा जाता है। जिस धर्म में गाय को गाय नहीं गौमाता कहा जाता है, उसी धर्म के लोगों के पास गाय और गौशालाओं के लिए एक पैसा नहीं और मंदिर में बैठे पत्थरों के भगवान पर करोड़ों का चढ़ावा चढ़ा रहे हैं। भागवत कथाओं के नाम पर किट्टी पार्टियां कर रहे हैं, इसमें भी लाखों-करोड़ों खर्च कर रहे हैं। पर गाय के लिए एक ढेला नहीं। वे समझते हैं कि ऐसा करने से उन्हें पुण्य प्राप्त होगा, पाप कर्म छूट जायेंगे और स्वर्ग की प्राप्ति होगी। वाह रे ! भोले-भाले नादान हिन्दू... तेरी बुद्धि पर तरस आता है। अभी ज्यादा कुछ नहीं बिगड़ा है, समय रहते हिन्दू चेत जायें तो अपनी महाभूल को अभी भी सुधार सकता है। गौपालन करके, गौशालाओं को मदद करके, देशी गाय को शंकर बनने से बचाकर, कत्लखानों से बचाकर, अवारा घूम रही गौओं को गौशालाओं में पहुंचाकर, गाय की विशेषताएँ सम्पूर्ण जगत में प्रचार-प्रसार करके, धर्मगुरुओं पर धन न लुटाकर-सीधे गौसेवा करके। अगर हिन्दू समय रहते उपर्युक्त बातों पर अमल करे तो आज निश्चय ही गौमाता को बचाया जा सकता है और भारतवर्ष गौहत्या के पाप से मुक्त भी हो सकता है। *- ऋषि मुकेश वर्मा*

सभा का मुख पत्र हिन्दी मासिक "अग्निदूत" के १५वें वर्ष में प्रवेश पर समस्त सुधि पाठकों को छत्तीसगढ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं "अग्निदूत" परिवार की ओर हार्दिक शुभकामनाएँ.

पुण्य स्मरण क्रान्तिकारियों का सरताज - चन्द्रशेखर आजाद

जयन्ती २३ जुलाई

- लोचन शास्त्री

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

भारत माँ को विदेशी सरकार की दासता की जंजीरों से मुक्त करने के लिए तथा देश में शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए हमारे राष्ट्र के अनेक क्रान्तिकारियों ने एक लम्बे समय तक सशस्त्र क्रान्तिकारी आंदोलन चलाया था। वे अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध अपना सर्वस्व न्योछावर कर जंगे- आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे और इन तमाम संघर्षों का उद्देश्य था - देश की आजादी। ये नौजवान अपने उद्देश्यों के प्रति इतने सजग और समर्पित थे कि किसी सरकार की यातना भी उन्हें अपने ध्येय से विचलित न कर सकी। वे फाँसी के तख्ते पर चढ़ गए, गोलियों के शिकार हुए तथा दीर्घकाल तक जेलों में नारकीय यातनाएँ सहते रहे, तथापि टूटे नहीं, झुके नहीं। सर पर कफन बांधे बड़ी बहादुरी से ये लड़े और देश के लिए शहीद हो गए। देश की खातिर पहले कौन शहीद हो, वे इस बात के लिए अवश्य लड़ते थे। हर मुसीबत में अपने क्रान्तिकारी साथियों को बचाते हुए आगे बढ़कर मौत को ललकारने वाले इन क्रान्तिकारी शहीदों में एक लोकप्रिय नाम है - आतमयाजी चन्द्रशेखर आजाद।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म **२३ जुलाई १९०६** तद्नुसार सावन सुदी दूज दिन सोमवार को मध्यप्रदेश में अलीराजपुर रियासत के भावरा ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम पं. सीताराम तिवारी और माता का नाम श्रीमती जगरानी देवी था। आजाद का जन्म घोर विपन्नता के बीच हुआ था। आजाद के पितामह मूलतः कानपुर के निवासी थे। चपन से ही पढ़ने-लिखने के बजाय तीर-कमान या बन्दूक चलाने में आजाद की अत्याधिक रुचि थी। आजाद विद्या के केन्द्र काशी में पहुंच गये। वहां काशी विद्यापीठ में भर्ती हो गए और संस्कृत का अध्ययन करने लगे। वहां रह कर 'लघुकौमुदी' और 'अमर कोष' रट लिए। पढ़ाई के अतिरिक्त उनमें राष्ट्रीय प्रेम भी जागृत होने लगा। आजाद पढ़ाई की अपेक्षा क्रान्तिकारी साहित्य और क्रान्तिकारी संगठन में सम्मिलित होने के लिए अधिक प्रयत्नशील रहा करते थे। वास्तव में वे सोचते

रहते थे - 'कोड़े खाकर अथवा महात्मा गांधी जी की जय बोलकर देश आजाद हो सकता है ? आजाद ने अब क्रान्ति पर कुछ सोचना समझना और पढ़ना आरम्भ कर दिया। उनकी भावना और विचारों में एक नया मोड़ आया कि क्रान्ति द्वारा ही देश स्वतन्त्र हो सकता है। उनके हृदय में तो देश के बन्धन काटने के लिए कुछ कर दिखाने की ज्वाला धधक रही थी, वे स्कूल की सीमा में अपने को कैसे कैद कर लेते ? वे पढ़ाई छोड़कर सशस्त्र क्रान्ति का आयोजन करने वाले किसी गुप्त क्रान्तिकारी संघ की खोज करने लगे। वे आगे चलकर भारतीय प्रजातन्त्र संघ के सदस्य और सेनापति बने।

इन्हीं दिनों महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन चला और इसका प्रभाव बनारस विद्यापीठ में पढ़ रहे छात्रों पर भी पड़ा। छात्रों ने जुलूस निकाला। झण्डा आजाद के हाथ में था। इसका परिणाम यह हुआ कि वे गिरफ्तार कर लिए गए और मजिस्ट्रेट ने १५ वर्षीय आजाद से पूछा - "तुम्हारा नाम" ? - "आजाद"। "पिता का नाम" ? - "स्वाधीनता"। "घर" ? - "जेल"।

चन्द्रशेखर आजाद ने बैंत खाकर यह बता दिया कि देश की आजादी के लिए युवक बड़ी से बड़ी दारुण यातना भी हंसते-हंसते झेल सकते हैं। मजिस्ट्रेट के आदेशानुसार जब जेल में आजाद की पीठ पर बैंत मारे गये थे तब उनके पीठ की खाल तक उड़ गई थी और पीठ का

मांस दीखने लगा था। इतने पर भी आजाद के माथे पर जरा भी शिकन नहीं पड़ी थी। कोड़े के प्रत्येक प्रहार पर वे 'वंदेमातरम्', 'महात्मा गांधी की जय' - 'भारत माता की जय' का उद्घोष करते रहे। उनके इस पराक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा घर-घर में होने लगी। लोग उन्हें श्रद्धा तथा आदर के भाव से देखते थे और उनके दर्शनों के लिए लालायित रहते थे। सम्पूर्णानन्द द्वारा सम्पादित 'मर्यादा' पत्रिका में 'वीर बालक आजाद' के नाम से लेख प्रकाशित हुआ। इसी समय से उनका नाम 'आजाद' पड़ गया। आजाद उस समय निर्भीकता और उत्साह के साथ कहा करते थे- **"मैं जीवन के अंतिम सांस तक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ता रहूंगा।"** उनका लोकप्रिय नारा था-

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हम आजाद ही रहेंगे ॥

पता : भानुप्रतापपुर (छ.ग.)

सावन का गीत

हरी पत्तियाँ, हरी कोपलें, बेल हुई छतनार,
श्यामा बदली की छाया में, झूमे यह संसार।

झूमे तरुवर, पर्वत झूमें, झूमें है कचनार,
गुलमोहर संग नीम निगोड़ी, गाये राग मल्हार,
ता ता थैया सारंग नाचे, नाचे संग फुलवार ॥
श्यामा बदली....... ।
तरुनाई की स्वर्णिम आभा, भीगे अंग फुहार,
उड़ने की चाहत में उसको, लग गये पंख हजार,
यौवन की उमंग अभिलाषा, कामदेव झंकार ॥
श्यामा बदली....... ।
रुन-झुन रुन-झुन पायल बाजे, खेत हुए गुलजार,
हलधर के जयकारे के संग, खेत चले खेतिहार,
उत्सव है यह हरियाली का, शीतल हुई बयार ॥
श्यामा बदली....... ।

- आनन्द प्रकाश गुप्त, बिलासपुर

"सच्चा"

सच्चे हो
एक तो परिचय-पत्र दिखाओ
राशन कार्ड, वोटर कार्ड,
आई कार्ड, स्थाई जाति प्रमाण पत्र दिखाओ,
और है भी तो वे सब झूठे है
क्योंकि हम सच्चे हैं।
सच्चे का सब फर्जी है।
और झूठे का सब असली है।
उसका काम, नौकरी, व्यापार
पहचान-पत्र डिग्रियाँ
क्योंकि बहुत सारे झूठो ने
गवाही दी है उसके पक्ष में
कोर्ट तो सबूत मांगता है
सच्चे के पास न गवाह न सबूत
तो सच्चे को कारावास है सश्रम।

ले. देवेन्द्र कुमार मिश्रा, पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

ज्ञानोदय : "करनी का फल"

आपने जरूर कुछ ऐसा किया है या फिर कर रहे हैं, जिसके कारण आप दुखी हैं। परमात्मा कभी भूल नहीं करते। प्रकृति कभी गलती नहीं करती। तुम अपनी जिन्दगी को देखो, तुमने जो कुछ दिया है, वही मिल रहा है। तुमने जो कुछ बोया है, वही मिल रहा है। तुम भूल जाते है, बोते समय तुम सोचते हो बीज तो हमने बोये थे अमृत के और फल मिल रहे हैं विष के। किया तो था हमने भला और हो रहा है बुरा। दिये थे आशीर्वाद और मिल रही है गालियाँ। दिया था प्यार और मिल रही है फटकार। नहीं, यह संभव नहीं है। यहां इंच-इंच का हिसाब है, रत्ती-रत्ती का हिसाब है। तुमने जो किया है, वही मिल रहा है। **ईश्वर जो करते हैं वह आपके हित के लिए है, मगर धीरज रखो समय आने पर पता लगेगा।**

- स्वामी कूटस्थानन्द

संदेशात्मक

पानी का महत्व

- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

पानी सफेद सोना है और यह सोना इस समय भारत के अधिकांशतः गांवों में सड़कों और नालियों में बुरी तरह से बहाया अथवा फैलाया जा रहा है। इसी सफेद सोने की बूंद-बूंद के लिए भारत के कुछ हिस्सों में प्राणी तरस रहे हैं। लेकिन जहां यह अभी भी उपलब्ध है, वहां लोग इसे बचाने की तरफ कोई खास ध्यान ही नहीं दे रहे हैं। उन्हें भी जल्द पता चलने वाला है कि एक बूंद कितनी कीमती है। जबसे गांवों में समरसेबिल बोरिंग पम्प (इलेक्ट्रानिक) लगना शुरु हुई है तबसे लोग पानी को बहुत बुरी तरह से बर्बाद करने लगे हैं। एक आदमी नहाने में ही सैकड़ों लीटर पानी सड़कों पर, नालियों में बहा देता है वो भी पूर्णतः स्वच्छ मिनरल वाटर। शहरों में जिसकी कीमत बहुत अधिक होती है और शायद ही ऐसा पानी मिलता हो।

भारत में बढ़ती जनसंख्या के साथ संसाधनों की जरुरत भी बढ़ रही है। लेकिन कुछ प्राकृतिक संसाधनों को हम अपनी मर्जी से बढ़ा भी नहीं सकते। कुछ पदार्थों के बगैर जिया जा सकता है परन्तु पानी के बगैर कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता। आपकी जानकारी के लिए यहां बताना बेहद जरुरी है कि पहले हमें जल सम्पन्न देशों की श्रेणी में गिना जाता था, लेकिन अब हम जल सम्पन्न देशों की श्रेणी से बाहर हो चुके हैं और यह कितना भयावह है कि इसका अंदाजा हम अभी नहीं लगा पा रहे हैं। लेकिन इस हकीकत से हम ज्यादा देर तक आँख मिचौली का खेल नहीं खेल सकते हैं, जल्द हम सबको पानी की एक-एक बूंद की कीमत का पता चलने वाला है।

निरन्तर भू-जल स्तर का गिरना, पानी की कमी का खुला संकेत है पर हमारे पास तो बेहतर से बेहतर मशीनें हैं जो कितना भी गहरा पानीहो उसकी बूंद-बूंद खींच लें, परन्तु आज तक ऐसी कोई मशीन नहीं बनी जो पानी बना सके। भले ही भारत में वर्षा और हिमपात के रुप में पर्याप्त पानी बरसता है, लेकिन यह पूरा का पूरा पानी सही इस्तेमाल के लिए उपलब्ध नहीं है। अधिकांश पानी देश की विशिष्ट भू-आकृति व अज्ञानतावश इधर-उधर से बहकर समुद्र में चला जाता है। कुछ हिस्सा भाप बनकर उड़ जाता है और थोड़ा बहुत बचता है, उसे ही धरती सोंख पाती है, इससे पर्याप्त रुप से पानी धरती के अन्दर नहीं पहुंच पाता और यही कारण है कि निरन्तर भू-जल स्तर नीचे गिर रहा है। अपने देश में ही नहीं अपितु दुनियाभर में हालत इतनी नाजुक है कि अगर मौसम थोड़ी सी भी ऊँच-नीच कर देता है तो नतीजे भयानक रुप में निकल कर सामने आ जाते हैं।

अब वक्त की बहुत जरुरी मांग है कि लोगों को जागरुक हो जाना चाहिए। राजनेताओं से मुफ्त में मिली सबमरशिबल पम्पों का सही इस्तेमाल करें। पानी की जितनी जरुरत हो उतना ही खर्च करें। कोशिश करें कि कम से कम खर्च हो। जब बाल्टी से एक आदमी महज १०-१२ लीटर पानी में नहा सकता है तो क्यों सिर पर पाइप लगाकर सैकड़ों लीटर पानी सड़कों पर बहा रहे हो। गाड़ी धोने के गलत तरीकों से हजारों लीटर पीने योग्य पानी को नालों में बहा रहे हो। बंद करो यह सब... वर्ना वो दिन दूर नहीं जब पानी की एक-एक बूंद के लिए तुम्हारा सारा सोना-चांदी, रुपया-पैसा कम पड़ जायेगा।

पता : ग्राम रिहावली, डाक तरौली गूजर,
फतेहाबाद, आगरा-२८३१११

सत्य वचन

यदि कोई अपने संस्कारों के कारण अच्छा जानता हुआ भी बुरे कार्य में प्रवृत्त होता है, तो वह दुःखस्वरुप फल से नहीं बच सकता, क्योंकि पाप का फल दुःख ही होता है, जो व्यक्ति विद्या के प्रकाश में अच्छा जानकार भी अच्छा कर्म नहीं करता, बुरा जानकर भी उसे नहीं छोड़ता, वह चोर के समान है, जैसे चोर को बुरा जानता हुआ भी नहीं छोड़ता।

- स्वामी सत्यपति परिव्राजक

आरोग्य होमियोपैथी चिकित्सा से हृदय रोग का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ७०००२३६२१३, ९४२५५१५३३६

हृदय रोग के कारण - आज विश्व में सबसे घातक कोई रोग तेजी से बढ़ता नजर आ रहा है तो वह है हृदय रोग। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष २०२० तक भारत में पूरे विश्व की तुलना में सर्वाधिक हृदय के रोगी होंगे। हमारे देश में प्रत्येक वर्ष लगभग एक करोड़ लोगों को दिल का दौरा पड़ता है। मनुष्य का हृदय एक मिनट में तकरीबन ७० बार धड़कता है। चौबीस घंटों में १०,८०० बार। इस तरह हमारा हृदय एक दिन में तकरीबन २००० गैलन रक्त का पम्पिंग करता है। स्थूल दृष्टि से देखा जाय तो यह मांसपेशियों का बना एक पम्प है। ये मांसपेशियाँ संकुचित होकर रक्त को पम्पिंग करके शरीर के सभी भागों तक पहुंचती है। हृदय की धमनियों में चर्बी जमा होने से रक्त प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होता है जिससे हृदय को रक्त कम पहुंचता है। हृदय को कार्य करने के लिए आक्सीजन की माँग व पूर्ति के बीच असुतंलन होने से हृदय की पीड़ा होना शुरु हो जाता है। इस प्रकार के हृदय रोग का दौरा पड़ना ही अचानक मृत्यु का मुख्य कारण है।

हृदय रोग के कारण :- युवावस्था में हृदय होने का मुख्य कारण अजीर्ण व धूम्रपान है। धूम्रपान न करने से हृदय रोग की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। फिर भी उच्च रक्त चाप ज्यादा चर्बी व कोलेस्ट्रोल अधिक होना, अति चिंता करना और मधुमेह भी इसके कारण हैं। मोटापा, मधुमेह, गुर्दों की अकार्यक्षमताएँ रक्तचाप मानसिक तनाव, अति परिश्रम, मल-मूत्र की हाजत को रोकने तथा आहार-विहार में प्राकृतिक नियमों की अवहेलना से ही रक्त में वसा का प्रमाण बढ़ जाता है। अतः धमनियों में कोलेस्ट्रोल के थक्के जम जाते हैं, जिससे रक्त प्रवाह का मार्ग तंग हो जाता है। धमनियाँ कड़ी और संकीर्ण हो जाती हैं।

हृदय रोग के लक्षण :- छाती में बायीं और या छाती के मध्य में तीव्र पीड़ा होना या दबाव सा लगना, जिसमें कभी पसीना भी आ जाता है और श्वांस तेजी से चल सकता है। कभी ऐसा लगे कि छाती को किसी ने चारों ओर से बाँध दिया हो अथवा छाती पर पत्थर रखा हो। कभी छाती के बायें या मध्य भाग में दर्द न होकर शरीर के अन्य भागों में दर्द होता है, जैसे की कंधे में बायें हाथ में, बायीं ओर गरदन में, नीचे के जबड़े में, कोहनी में या कान के नीचे वाले हिस्से में।

कभी पेट में जलने, भारीपन लगना, उल्टी होना, कमजोरी सी लगना ये तमाम लक्षण हृदय रोगियों में देखे जाते हैं। कभी कभार इस प्रकार का दर्द काम करते समय, चलते समय या भोजनेपरांत भी शुरु हो जाता है, पर शयन करते ही स्वस्थता आ जाती है। किन्तु हृदय रोग के आक्रमण पर आराम करने से भी लाभ नहीं होता। मधुमेह के रोगियों को बिना दर्द हुए भी हृदय रोग का आक्रमण हो सकता है।

हृदयरोग की प्रमुख होमियो औषधियाँ :- एकोनाइट, ब्रायोनिया, स्पाइजेलिया, नेट्रम सल्फ, क्रेटिगस, आर्निका, फेरम फास, मैग्नीशिया फास, आर्सेनिक, ग्लोनाइन आदि औषधियाँ अनुभवी चिकित्सक से परामर्श कर ली जा सकती है। होमियो उपचार कई रोगी उपचार कराकर ठीक हो गए हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है। होमियो औषधियाँ हृदय की गति को सामान्य कर देती है।

पथ्य :- हृदय रोगियों में अंगूर व नींबू का रस, गाय का दूध, जौ का पानी, कच्चा प्याज, आँवला, सेब आदि। छिलके वाले साबुत उबले हुए मूँग की दाल, गेहूँ की रोटी, जौ का दलिया, परवल, करेला, गाजर, लहसुन, अदरक, सोंठ, हींग, जीरा, काली मिर्च, सेंधा नमक, अजवायन, अनार, मीठे अंगूर, काले अंगूर आदि।

अपथ्य :- चाय, काफी, घी, तेल, मिर्च, मसाले, दही, पनीर, मावे, खोया से बनी मिठाईयाँ, टमामटर, आलू, गोभी, बैंगन, मछली, अंडा, मांसाहार, फास्टफूड, ठंडा बासी भोजन, भैंस का दूध व घी, फल, भिंडी, गरिष्ठ पदार्थों के सेवन से बचें। धूम्रपान न करें। मोटापा मधुमेह व उच्च रक्त चाप आदि को नियंत्रित रखना चाहिए।

समाचार प्रवाह

दानवीर दाऊ तुलाराम जी परगनिहा आर्य के ९४वाँ प्राकट्य दिवस के पावन अवसर पर

विश्व कल्याण महायज्ञ एवं किसान सम्मेलन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

रायपुर। दानवीर दाऊ तुलाराम जी परगनिहा आर्य का ९४वाँ प्राकट्य दिवस पर दिनांक २६ जून २०१९ स्थान महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में एक दिवसीय विश्व कल्याण महायज्ञ और किसान सम्मेलन (किसान सभा बाड़ा लवन, कूंरा, ढाबा-कुम्ही) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. के.एल. वर्मा, यज्ञ के ब्रह्मा एवं अध्यक्षता आचार्य अंशुदेव आर्य जी-प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आमंत्रित विद्वान् पं. काशीनाथ चतुर्वेदी सहित गणमान्य व्यक्तियों के उद्बोधन के साथ ५०० से अधिक की उपस्थिति में कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रातः ९ बजे से विश्व कल्याण महायज्ञ, संगीतमय भजन के साथ यज्ञ के ब्रह्मा द्वारा सारगर्भित उद्बोधन दिया गया। साथ में आचार्य संजय शास्त्री एवं आचार्य बलदेव राही सभा उपमंत्री (कार्यालय) ने विश्व कल्याण महायज्ञ में सहयोग प्रदान किया। सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा ने अपने उद्बोधन में दाऊ तुलाराम जी परगनिहा आर्य के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा द्वारा किया गया।

माननीय कुलपति द्वारा सभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को यह शपथ दिलाया गया कि दानवीर दाऊ तुलाराम जी परगनिहा के द्वारा दिये गये दान १४०० एकड़ कृषि भूमि में से ८०० एकड़ कृषि भूमि की बिक्री पूर्व पदाधिकारियों द्वारा कर दी गई थी, जो कि वर्तमान में हमारे कार्यकाल में ६०० एकड़ कृषि भूमि बच गई है, उसमें से एक इंच जमीन न तो स्वयं बिक्री करेंगे और न ही भविष्य में किसी को बिक्री करने देंगे। चाहे हम पद में रहे अथवा न रहें।

कार्यक्रम में श्री चतुर्भुज कुमार आर्य सभा कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज टाटीबन्ध के प्रधान डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री दयाराम वर्मा सभा उपप्रधान एवं प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्रद्धानन्द उच्च. माध्य. विद्यालय के संतोषीनगर के संचालकगण, श्री आनन्द भोई सभा अंतरंग सदस्य, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, केवल कृष्ण बिज सहित सभा बाड़ा कूंरा के प्रबंधक सुधीर दुबे सहित ३० किसान एवं तुलाराम आर्य उ.मा. विद्यालय कूंरा के प्राचार्य सहित समस्त स्टॉफ व छात्र-छात्राएँ, सभा बड़ा लवन के प्रबंधक रामकुमार वर्मा के साथ ४० किसान एवं तुलाराम आर्य हाई स्कूल लवन के प्राचार्य सहित समस्त स्टॉफ और सभा बाड़ा ढाबा-कुम्ही के प्रबंधक संतोष कुमार वर्मा के साथ ४५ किसान, महर्षि दयानन्द उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के प्राचार्य बिनोद सिंह, उपप्राचार्य पुरुषोत्तम वर्मा सहित समस्त स्टॉफ, छात्र-छात्रायें, सभा कार्यालय दुर्ग के प्रबंधक श्री के.के. गुप्ता सहित समस्त कर्मचारीगण उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। दोपहर २ बजे से ऋषि लंगर में सैकड़ों श्रद्धालुजनों उपस्थित होकर भोजन प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

दयानन्द के बेटे

वेद ज्ञान लेकर के दिल से, हम तूफान समेटे हैं,
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।
हमने उन्हें बचाया है जो, मझधारों में लेटे हैं,
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।
संस्कृति की रक्षा खातिर, हम विष भी पी लेते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।
भारत माता की खातिर हम, फाँसी पर चढ़ लेते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।
लहू बहाकर देश की खातिर, त्याग स्वयं का देते हैं,
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।

यज्ञ प्रशिक्षण शिविर (रविवार १४ जुलाई २०१९)

-: आवश्यक सूचनायें व नियमावली :-

वैदिक धर्म में यज्ञों-महायज्ञों की महत्ता सर्वविदित है। देवयज्ञ-अग्निहोत्र इसके दैनिक नित्यकर्मों में सम्मिलित है। यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है तो वह तभी श्रेष्ठतम हो सकता है जब वह विधिवत उचित रीति से किया जावे। समाज में दैनिक एक या दोनों समय, साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक यज्ञ करने वाले भी सब के सब इसे ठीक से नहीं कर पाते है। जैसा उन्होने देखा वैसा ही करने के अभ्यस्त हो जाते हैं। अग्निहोत्र को अधिकाधिक शुद्ध रीति से करने की भावना होते हुए भी उचित प्रशिक्षण के अभाव में ऐसा हो नहीं पाता। अग्निहोत्र करने के इच्छुक नये व्यक्ति सम्यक जानकारी न होने के कारण इसे करने से हिचकिचाते हैं, कहीं गलत करने से कोई हानि न हो जाये। अनेक यज्ञकर्ता यज्ञ तो करते हैं किन्तु यज्ञ के बारे में उसकी समझ कम रहती है। जो यज्ञ (अग्निहोत्र) अपने घर में करना चाहते हैं परन्तु उसका विधि-विधान नहीं जानते हैं, ऐसे नये व्यक्ति यहां प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने घर में स्वयं कर सकते हैं। जो यज्ञ करते हैं वे तथा नये भी सभी यज्ञ का महत्व, वर्तमान युग में उसकी उपयोगिता उससे पारिवारिक व सामाजिक लाभ आदि का परिज्ञान इस शिविर में कर पायेंगे।

समाज में यज्ञ परम्परा उचित रीति से चले व बढ़े इसके लिए वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़ गुजरात में स्मृति शेष आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य ने यज्ञ प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की, अनेक बहुकुण्डीय यज्ञ युक्त यज्ञ प्रशिक्षण शिविर लगाये और यज्ञ विषयक साहित्य भी छपवाये। यज्ञ प्रशिक्षण शिविर प्रतिमाह एक रविवार को आयोजित करने का निर्णय किया गया है। इसमें प्रातः ९.३० से १२ बजे व अपरान्ह २ से ४.३० बजे तक लगभग ३ घण्टों में यज्ञ प्रशिक्षण दिया जायेगा। शिविर निःशुल्क है। स्वेच्छा से कोई सहयोग करने चाहे तो कर सकते हैं। कृपया अपने बच्चों या परिचितों को यज्ञ प्रशिक्षण हेतु भेज कर सर्वकल्याणकारी इस कार्य में पुण्य के भागी बनें। दूर से आने वाले एक दिन पूर्व आ सकते हैं। इच्छुक व्यक्ति यज्ञ के अभ्यास हेतु एक-दो दिन और आश्रम में रुक सकते हैं। दो दिन पूर्व तक पंजीकरण कराया जा सकता है।

संपर्क : वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन रोजड़ गुजरात (दूरभाष : ९४२७०५९५५०, ९७२३०६७१४३)

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

– दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

दिनांक 26 जून 2019 को महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न
दाऊ तुलाराम जी परगनिहा "आर्य" का 94वाँ प्राकट्य दिवस की चित्रमय झलकियाँ

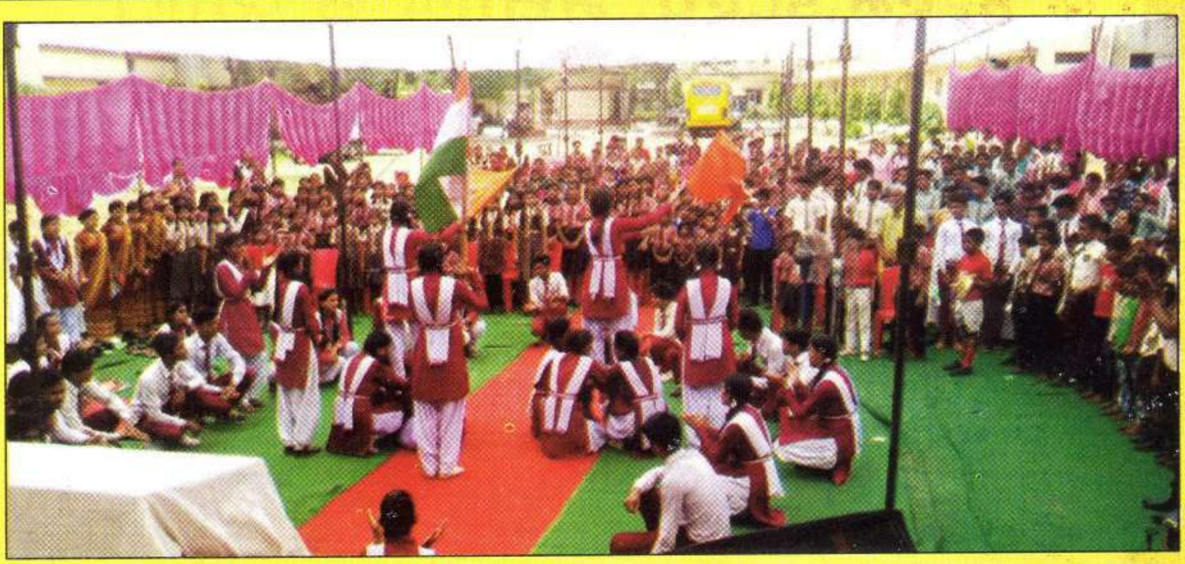

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारी
(दिनांक 12-04-2019 से 11-04-2022 तक)

(भूल सुधार)

वृन्दासेवक आर्य
उपमंत्री दुर्ग परिक्षेत्र

छबिलसिंह रघुवंशी
उपमंत्री बस्तर परिक्षेत्र

रविशंकर आर्य
वेदप्रचार अधिष्ठाता

CHH-HIN/2006/17407 जुलाई 2019 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

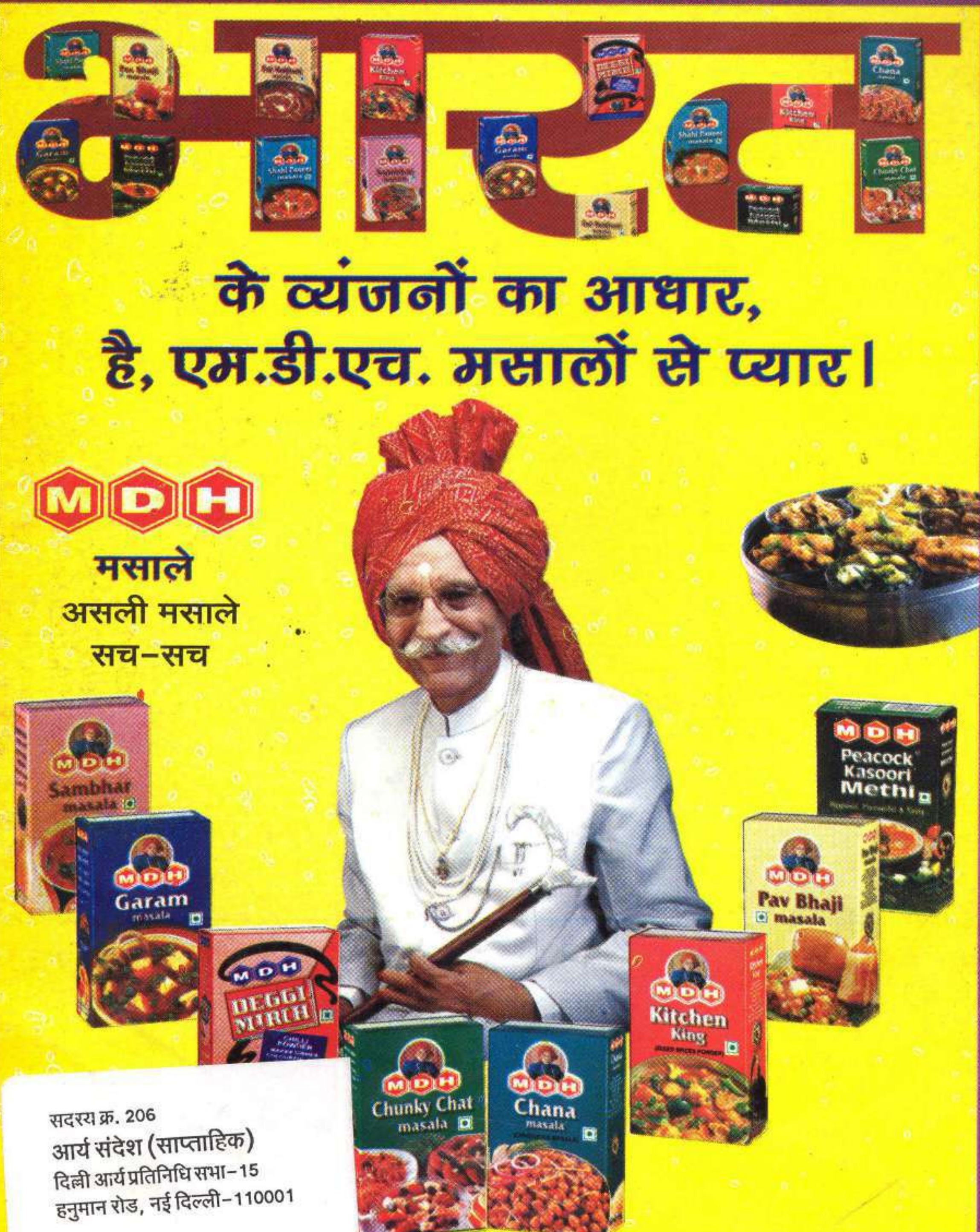

सदस्य क्र. 206
आर्य संदेश (साप्ताहिक)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15
हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001